हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार 26 अप्रैल 2026

11 मच्छरों से बचाव ही मलेरिया रोकने का सबसे असरदार तरीकाः डॉ. गर्ग

12 बदहाली की कगार पर मिड-डे मील योजना...

गर्मी का अटैक : डिहाइड्रेशन के मरीज 40 प्रतिशत बढ़े, स्कूलों में 10 बजे के बाद एक्टिविटी बंद, अगले हफ्ते आंधी-बादल के संकेत

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

जिले में गर्मी अब 'खतरे के जोन' में पहुंच गई है। पारा 42 डिग्री पार करते ही दोपहर में सड़कों पर सन्नाटा छा रहा है, जबकि शाम को पार्कों में भीड़ उमड़ रही है। शनिवार को चली गर्म हवाओं ने हालात और बिगाड़ दिए। रातें भी तपने लगी हैं, न्यूनतम तापमान 28 डिग्री तक पहुंच गया है, यानी राहत कहीं नहीं। मौसम विभाग ने 26 अप्रैल को पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से बादलवाई, बूंदाबांदी व अंधड़ की चेतावनी दी है। पश्चिमी विक्षोभ का प्रभाव 28 व 29 अप्रैल तक रहेगा। इस दौरान तेज आंधी के अलावा प्रदेश के कुछ हिस्सों में तेज बारिश की भी संभावना जताई गई है। इस बार गर्मी ने सारे रिकार्ड तोड़ दिए हैं। दरअसल, मार्च व अप्रैल का महीनो मौसम के लिहाज से सामान्य नहीं कहा जा सकता। सिविल अस्पताल की ओपीडी में डिहाइड्रेशन के मरीजों की संख्या 40 प्रतिशत तक बढ़ गई है। डीईओ संगीता बिश्नोई ने आदेश जारी किए हैं कि सुबह 10 बजे के बाद स्कूलों में कोई एक्टिविटी नहीं होगी। गेहूं की फसल को सही सलामत मंडियों तक पहुंच गई लेकिन आम जनमानस गर्मी की मार नहीं सह पा रहा। गर्मी का सबसे ज्यादा असर छोटे बच्चों व बुजुर्गों पर पड़ रहा है। पिछले 10 सालों का गर्मी का रिकार्ड देखा जाए तो ऐसा मौसम जून महीने में ही आता है। लोग यह सोचकर ही कांप जाते हैं किअगर अप्रैल में यह हाल है तो लगातार 100 दिन कैसे भीषण गर्मी के कटेंगे।

पारा 42 डिग्री पार, सड़कों पर सन्नाटा, गर्म हवाओं ने बिगाड़े हालात

अगले हफ्ते बदलेगा मौसम का मिजाज, लेकिन राहत अस्थायी

मौसम विभाग के मुताबिक इस हफ्ते गर्मी से राहत नहीं मिलेगी और पारा 42 के आसपास ही रहेगा। हालांकि अगले हफ्ते एक कमजोर पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय हो सकता है, जिससे तेज हवाएं, आंधी और बादल छाने की संभावना है। इससे तापमान में हल्की गिरावट आ सकती है, लेकिन यह राहत ज्यादा दिन टिकने वाली नहीं, इसके बाद फिर हीटवेव का दौर लौट सकता है।

फतेहाबाद। नागरिक अस्पताल में उमड़ी मरीजों की भीड़ व स्कूल में पढ़ाई करते बच्चे। *फोटो : हरिभूमि*

अस्पतालों में भीड़, चक्कर, सिरदर्द, ज्यादा प्यास और कमजोरी की शिकायत लेकर पहुंच रहे मरीज

गर्मी का सीधा असर सेहत पर दिख रहा है। सिविल अस्पताल की ओपीडी में डिहाइड्रेशन के मरीजों की संख्या 40 प्रतिशत तक बढ़ गई है। चक्कर, सिरदर्द, ज्यादा प्यास और कमजोरी की शिकायत लेकर रोज मरीज पहुंच रहे हैं। सबसे ज्यादा असर महिलाओं और बच्चों पर दिख रहा है।

शिक्षा विभाग ने दिखाई सख्ती, दिए निर्देश

हालात को देखते हुए शिक्षा विभाग ने सख्ती दिखाई है। डीईओ संगीता बिश्नोई ने आदेश जारी किए हैं कि सुबह 10 बजे के बाद स्कूलों में कोई एक्टिविटी नहीं होगी। बच्चों को बार-बार पानी पिलाने के निर्देश दिए गए हैं, साथ ही कक्षाओं को गर्म हवाओं से बचाने के लिए खिड़की, रोशनदान बंद रखने को कहा गया है।

अस्पताल में इंतजाम, एक्सपर्ट डॉक्टर तैनात

सिविल अस्पताल प्रशासन ने बढ़ते मरीजों को देखते हुए तैयारी तेज कर दी है। एसएमओ डॉ. बुधराम के अनुसार डिहाइड्रेशन के इलाज के लिए विशेषज्ञ डॉक्टर लगाए गए हैं। अस्पताल में बैठने, पानी और बिजली की अतिरिक्त व्यवस्था की गई है, ताकि मरीजों को दिक्कत न हो।

खबर संक्षेप

एक किलो अफीम के साथ तस्कर गिरफ्तार

फतेहाबाद। नशा तस्करों के खिलाफ फतेहाबाद पुलिस के अभियान को उस समय बड़ी सफलता मिली, जब सीआईए की टीम ने एक किलो से अधिक अफीम सहित एक युवक को रंगे हाथों काबू किया। आरोपी की पहचान फतेहाबाद की अग्रसैन कॉलोनी निवासी शमशेर अली के रूप में हुई है। सीआईए फतेहाबाद के प्रभारी वेदपाल ने बताया कि पुलिस टीम गश्त के दौरान पुराना बस अड्डा क्षेत्र में मौजूद थी। इसी दौरान कार्रवाई की गई।

10 किलो डोडा पोस्त समेत पंजाब का तस्कर पकड़ा

फतेहाबाद। सीआईए की टीम ने नए बस अड्डे के पास से पंजाब के एक तस्कर को भारी मात्रा में डोडा पोस्त के साथ काबू किया है। सीआईए प्रभारी उप-निरीक्षक वेदपाल ने बताया कि पुलिस टीम मताना मोड़ पर गश्त पर थी, तभी सूचना मिली कि एक व्यक्ति नशीले पदार्थ की बड़ी खेप लेकर पंजाब जाने की फिराक में नए बस अड्डे के पास खड़ा है। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी को काबू कर लिया।

गांजा तस्करी मामले में मुख्य सप्लायर गिरफ्तार

फतेहाबाद। नशा तस्करों के खिलाफ जारी विशेष अभियान के तहत भूना पुलिस ने गांजा तस्करी के मुख्य सप्लायर को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान अशोक नगर निवासी सागर उर्फ घघेरु के रूप में हुई है।

पुलिस ने हेरोइन सहित दो आरोपी किए काबू

सिरसा। पुलिस ने गांव हांडीखेड़ा क्षेत्र से कार सवार दो व्यक्तियों को हेरोइन सहित गिरफ्तार किया है। सीआईए सिरसा प्रभारी ने बताया कि पुलिस टीम गश्त के दौरान गांव हांडीखेड़ा की तरफ जा रही थी। इसी दौरान पुलिस पार्टी जब गांव हांडीखेड़ा के नजदीक पंहुची तो सामने से कार आती दिखाई दी जिसमें दो व्यक्ति सवार थे। शक के आधार पर पुलिस ने युवकों की तलाशी ली।

हाउसिंग बोर्ड ई-नीलामी के लिए दर्जनों बार निकाल चुका है विज्ञापन

खरीदार न मिलने से खंडहर होने लगे करोड़ो रुपये के हाउसिंग बोर्ड के फ्लैट्स

सुरेन्द्र असीजा ⏭फतेहाबाद

हिसार रोड पर सैक्टर 8 के बिलकुल पीछे हाउसिंग बोर्ड द्वारा एक दशक पहले बनाए गए फ्लैटों का आकार छोटा होने के कारण इसे कोई भी लेने को तैयार नहीं। लंबे समय से रख-रखाव के अभाव में ये फ्लैट अब जर्जर अवस्था में है। कुल 257 फ्लैटों में से मात्र 4 फ्लैटों में ही लोग रह रहे हैं। शुरू में यह फ्लैट बीपीएल के लिए बनाए गए थे लेकिन जरूरतमंदों द्वारा इन्हें लेने में कोई रूचि न दिखाने पर हाउसिंग बोर्ड ने इन्हें ई-नीलामी के द्वारा बेचने के काफी प्रयास किए लेकिन एक भी खरीददार नहीं आया। हालांकि शुरू में इसकी कीमत करीब साढ़े 5 लाख रुपये बताई गई थी। फ्लैट्स के यह दाम उस समय के है जब यहां प्रति गज 10 हजार रुपये कीमत थी। आज यहां कीमत 50 हजार गज के करीब पहुंच चुकी है। मानें तो करोड़ों की कीमत के फ्लैट 'बेकार' पड़े हुए हैं। अब हालात यह है कि इसमें न शासन, न प्रशासन कोई भी इसमें दिलचस्पी नहीं ले रहा।

फ्लैटों का आकार छोटा होने के कारण कोई खरीदने को राजी नहीं

फतेहाबाद। हाउसिंग बोर्ड द्वारा बनाए गए फ्लैट। *फोटो : हरिभूमि*

1587 लोगों ने फ्लैट के लिए किया आवेदन

सरकार ने शहरी आवास योजना का नाम बदलकर प्रधानमंत्री आवास योजना का नाम दे दिया। योजना के तहत नगरपरिषद व नगरपालिका में कैंप लगावाए गए थे। ऐसे लोगों को चयनित किया गया जिनके पास ना तो घर है और ना ही खुद की जमीन है। ऐसे में वो ही फार्म अप्लाई कर सकते थे। फतेहाबाद, रतिया, टोहाना व भूना से 1587 लोगों ने फ्लैट लेने के लिए आवेदन किया। आवेदन के बाद इन लोगों को कहा गया था कि आपको विकास न्यू टाउनशिप के पीछे हाउसिंग बोर्ड द्वारा निर्मित एक फ्लैट दिया जाएगा, जिसमें दो कमरे, रसोई, बाथरूम आदि की सुविधा होगी। जिसकी कीमत करीब साढ़े पांच लाख रुपये है। ढाई लाख रुपये की सब्सिडी वापस भी आ जाएगी। ऐसे में इन लोगों को यह फ्लैट तीन लाख रुपये में 30 मीटर स्केवेयर का मिलना था। फतेहाबाद के 45 व रतिया के 4 आवेदकों ने 55 हजार रुपये नगरपरिषद द्वारा बताए गए खाते में डाल दिए।

आवेदन और जमा राशि का हाल

हाउसिंग बोर्ड ने कितने बनवाए फ्लैट	: 257
कब लगा था कैंप	: 2018-19
कितने लोगों ने किया आवेदन	: 1587
कितने लोगों ने रुपये भरे	: 49
प्रत्येक उम्मीदवार से यह ली गई राशि	: 55 हजार
फतेहाबाद नगरपरिषद से इन लोगों ने भरे रुपये	: 45
रतिया से इन लोगों ने जमा करवाई राशि	: 4
कितने रुपये में मिलना था फ्लैट	: 5.50 लाख
सरकार द्वारा कितने मिलनी थी सब्सिडी	: 2.50 लाख

13 साल पूर्व हाउसिंग बोर्ड ने बनाए थे फ्लैट

13 साल पूर्व हाउसिंग बोर्ड ने यह फ्लैट बनाए थे। शुरू में सरकार की योजना थी कि इसे जरूरतमंद, बेघर, बीपीएल परिवार को आवंटित किया जाएगा। बीपीएल के आवेदन न आने पर सरकार ने इसे प्रधानमंत्री आवास योजना का नाम दे दिया। सरकार की यह योजना भी फेल हुई।शुरू में 4-5 लोगों ने फ्लैट में रूचि दिखाई बाद में हाउसिंग बोर्ड ने ई-नीलामी के नाम पर दर्जनों बार अखबार में विज्ञापन दिए, इसका रिजर्व प्राइज भी साढ़े 5 लाख रखा लेकिन फ्लैटों का साइज इतना छोटा है कि इन्हें कोई भी लेने को तैयार नहीं।

विकास न्यू टाउन के पीछे बने हैं फ्लैट

हिसार रोड पर नव विकसित कालोनी विकास न्यू टाउन के पीछे हाउसिंग बोर्ड ने गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के लिए 257 फ्लैट बनाए थे। करीब पांच साल पहले जिले के 49 लोगों ने 55 हजार रुपये की राशि भी जमा करवा दी थी। लेकिन उसके बाद लोगों को फ्लैट देने के लिए ड्रा तक नहीं निकाले गए।

लाखों की साइबर ठगी के दो आरोपी राजस्थान से गिरफ्तार

- खैरपुर कॉलोनी की एक महिला से की थी 2.89 लाख की ठगी
- शेयर मार्केट में ट्रेडिंग के जरिए भारी मुनाफा कमाने का दिया लालच

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

पुलिस ने शेयर मार्केट में निवेश के नाम पर ठगी करने वाले गिरोह के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपियों को राजस्थान के जयपुर जिले से काबू किया गया है। पुलिस अधीक्षक दीपक सहारण ने बताया कि खैरपुर कॉलोनी सिरसा निवासी एक महिला के साथ करीब 2 लाख 89 हजार रुपये की साइबर ठगी की गई थी। पीड़िता ने अपनी शिकायत में बताया कि बीती 26 दिसंबर 2025 को उसके मोबाइल फोन पर एक अज्ञात नंबर से एक लिंक प्राप्त हुआ। जैसे ही उसने उस लिंक पर क्लिक किया, वह टेलीग्राम ऐप से जुड़ गई, जहां उसे शेयर मार्केट में ट्रेडिंग के जरिए भारी मुनाफा कमाने के आकर्षक संदेश दिखाए गए।

साइबर ठगों ने महिला को अपने जाल में फंसाने के लिए शुरू में उसके द्वारा निवेश की गई छोटी राशि पर नकली मुनाफा दिखाया और कुछ पैसे उसके खाते में वापस भी भेजे। इससे महिला का विश्वास बढ़ गया और उसने अधिक लाभ के लालच में आकर धीरे-धीरे कुल 2 लाख 89 हजार रुपए निवेश कर दिए। जब उसने अपनी पूरी राशि निकालने का प्रयास किया तो संबंधित लिंक बंद हो चुका था और उसे ठगी का अहसास हुआ।

सिरसा। साइबर ठगी के आरोपी पुलिस की गिरफ्त में। *फोटो : हरिभूमि*

सूचना के आधार पर कार्रवाई

पीड़िता की शिकायत के आधार पर बीती 20 मार्च को साइबर थाना सिरसा में मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। जांच के दौरान पुलिस टीम ने महत्वपूर्ण सूचनाओं के आधार पर कार्रवाई करते हुए मामले में संलिप्त दो आरोपियों कमल निवासी गांव मारवा जिला जयपुर तथा राकेश निवासी टयोढ जिला अजमेर को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अधीक्षक ने आमजन से अपील की है कि किसी भी अज्ञात लिंक पर क्लिक न करें और टेलीग्राम या अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर निवेश संबंधी लालच देने वाले संदेशों से सावधान रहें।

30 तक स्व-गणना में बनें भागीदार

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

भारत सरकार की ओर से चल रही जनगणना प्रक्रिया के तहत स्व गणना का कार्य जिला फतेहाबाद में आमजन द्वारा उत्साह पूर्वक किया जा रहा है। जिला में जहां नागरिक स्वेच्छा से स्व गणना प्रक्रिया में सहभागी बन रहे हैं वहीं शिक्षा, स्वास्थ्य, पंचायत, शहरी निकाय विभाग के माध्यम से जागरूकता लाते हुए लोगों को इस अभियान में 30 अप्रैल तक भागीदार बनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। डीसी डॉ. विवेक भारती के मार्गदर्शन में स्व-गणना क्रिया को आमजन के लिए सरल, पारदर्शी और सुलभ बनाने के उद्देश्य से एक विस्तृत फ्लो चार्ट जिला प्रशासन द्वारा जारी किया गया है। इस चार्ट के माध्यम से नागरिकों को ऑनलाइन पोर्टल के जरिए अपने परिवार की जनगणना, सत्यापन और अंतिम प्रमाणिकरण की पूरी प्रक्रिया चरणबद्ध तरीके से समझाई गई है।

स्व-गणना फ्लो चार्ट को करें फोलो : सीटीएम

जनगणना के नोडल अधिकारी एवं सीटीएम गौरव गुप्ता ने बताया कि पोर्टल में प्रवेश एवं प्रारंभिक पंजीकरण नागरिक पोर्टल पर जाकर लॉगिन करें। उसके बाद राज्य/केंद्र शासित प्रदेश का चयन कर कैप्चा कोड दर्ज करें। परिवार के मुखिया का नाम, 10 अंकों का मोबाइल नंबर और ई-मेल दर्ज करें। ध्यान रहे, एक मोबाइल नंबर से केवल एक ही परिवार पंजीकृत किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि सत्यापन एवं स्थान की पहचान अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें, बाद में बदली नहीं जा सकती,। पंजीकृत मोबाइल नंबर पर प्राप्त ओटीपी के माध्यम से सत्यापन करें और अपने निवास स्थान का पूरा विवरण भरने के साथ मानचित्र पर अपने घर की सटीक लोकेशन चिन्हित करें।

बुजुर्ग पिता की हत्या करने पर बेटा गिरफ्तार

सिरसा। पुलिस ने जिले के गांव किशनपुरा में शराब के नशे में बुजुर्ग पिता की चाकू से गोदकर हत्या करने वाले आरोपी बेटे को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी बेटा हत्या करने के बाद मौके से फरार हो गया था। ऐलनाबाद थाना प्रभारी प्रगट सिंह ने शनिवार को बताया कि मृतक संतलाल की बेटी अलका रानी ने गुरुवार रात्रि उसके चचेरे भाई का फोन आया कि उसके देशराज ने शराब के नशे में लड़ाई झगड़ा कर तुम्हारे पिता संतलाल की चाकू से गोदकर हत्या कर दी है। हत्या की सूचना मिलते ही वह अपने परिवार सहित गांव किशनपुरा में पहुंची और उसे पता चला कि उसके पिता को ऐलनाबाद के सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाया गया।

सफाई कर्मियों की हड़ताल जारी

- दूसरे दिन हाथों में उल्टी झाड़ू लेकर जताया रोष

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

हरियाणा सरकार की बेरुखी और लंबित मांगों को पूरा न किए जाने से नाराज नगर पालिका कर्मचारी संघ के आह्वान पर सफाई कर्मचारियों का आंदोलन लगातार तेज होता जा रहा है। इसी कड़ी में शनिवार को लगातार दूसरे दिन भी सैंकड़ों की संख्या में कर्मचारी सडक़ों पर उतरे और हाथों में उल्टी झाड़ू लेकर शहर भर में जोरदार प्रदर्शन किया। कर्मचारियों ने सरकार की नीतियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुए अपना विरोध दर्ज कराया। इस प्रदर्शन की अध्यक्षता संघ के इकाई प्रधान नरेश राणा ने की, जबकि मंच का संचालन सचिव ओमप्रकाश लोट द्वारा किया गया। प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए इकाई प्रधान नरेश राणा ने सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि मुख्यमंत्री ने 24 नवंबर 2024 को जींद की रैली में वेतन वृद्धि की सार्वजनिक घोषणा की थी, लेकिन अफसोस की बात है कि आज तक वह वादा धरातल पर नहीं उतरा है।

फतेहाबाद। मांगों को लेकर प्रदर्शन करते नगर परिषद कर्मचारी। *फोटो : हरिभूमि*

नप में रिश्वत कांड के आरोपी कर्मी को फिर से बहाल करने की तैयारी

हिमांशु अरोड़ा की पुनर्नियुक्ति पर उठे सवाल

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

फतेहाबाद में नगर परिषद से जुड़ा एक कथित रिश्वत प्रकरण एक बार फिर चर्चा में आ गया है। आईटीआई एक्टिविस्ट राधेश्याम सोनी ने हरियाणा कौशल रोजगार निगम और शहरी स्थानीय निकाय विभाग को भेजी शिकायत में गंभीर आरोप लगाए हैं। शिकायत के अनुसार, कौशल रोजगार निगम के माध्यम से नगर परिषद फतेहाबाद में कंप्यूटर ऑपरेटर के पद पर कार्यरत रहे हिमांशु अरोड़ा का नाम रिश्वत मामले में सामने आया था। बताया जा रहा है कि इस मामले में उन्हें गिरफ्तार भी किया गया था और वे करीब 40 दिन तक जेल में रहे। एक्टिविस्ट का आरोप है कि इसके बावजूद अब तक संबंधित कर्मचारी के खिलाफ कोई स्पष्ट विभागीय कार्रवाई जैसे निलंबन, चार्जशीट या अनुशासनात्मक कदम सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आए हैं। सबसे अहम बात यह सामने आई है कि जिला नगर आयुक्त द्वारा तीन अधिकारियों की एक कमेटी गठित कर मामले की रिपोर्ट ली गई है। सूत्रों ने दावा किया गया है कि इस रिपोर्ट के आधार पर हिमांशु अरोड़ा को दोबारा सेवा में लेने की प्रक्रिया चल रही है। उन्होंने मांग की है कि कर्मचारी की वर्तमान स्थिति स्पष्ट की जाए, विभागीय कार्रवाई की जानकारी सार्वजनिक की जाए।

चेयरपर्सन बोली : कुछ गलत नहीं किया, बीडीपीओ से कई सरपंच नाराज

सीएम को भेजी शिकायत, सरकारी धन के दुरुपयोग का आरोप

चेयरपर्सन ने सरकारी पैसे से लगवाए धर्म-स्थलों पर शेड, डीसी से की गई कार्रवाई की अनुशंसा

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

फतेहाबाद पंचायत समिति की बीजेपी चेयरपर्सन पर सार्वजनिक धन के कथित दुरुपयोग को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। चेयरपर्सन के खिलाफ मुख्यमंत्री को शिकायत भेजी गई है। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि पंचायत समिति/ब्लॉक डेवलपमेंट फंड और डी-प्लान फंड का इस्तेमाल गांवों में मंदिरों व गुरुद्वारों पर आयरन शेड बनाने के लिए किया गया। इसे नियमों के खिलाफ बताते हुए बीडीपीओ ने जांच के बाद डीसी को चेयरपर्सन पर कार्रवाई के लिए अनुशंसा की है। सीएम विंडो पर दी गई शिकायत में पंचायत समिति के सदस्य अमनदीप ने आरोप लगाया कि सरकारी धन का उपयोग केवल सार्वजनिक और सामुदायिक कार्यों के लिए होना चाहिए, लेकिन यहां विशेष धार्मिक स्थलों को लाभ पहुंचाया गया। शिकायत में गांव बरसीन, भोडियाखेड़ा, करनोली, दरियापुर, काताखेड़ी और भिरडाना में इस तरह के कार्य होने का जिक्र किया गया है। शिकायत में इसे संविधान के अनुच्छेद 14 और 27 का उल्लंघन बताते हुए सार्वजनिक कोष के दुरुपयोग का मामला करार दिया गया है।

फतेहाबाद। गांव भिरडाना के राधाकृष्ण मंदिर में पंचायत समिति द्वारा बनाया गया शेड।

नियमानुसार हुआ काम : चेयरपर्सन

इस संबंध में चेयरपर्सन पूजा बरसीन का कहना है कि मंदिर या अन्य धार्मिक स्थल पंचायत की जगह पर ही बने होते हैं, इसलिए हमने शेड बनवाए हैं। हम कहीं गलत नहीं है। बीडीपीओ ने डीसी को क्या रिपोर्ट दी है, इस पर हमें कुछ नहीं कहना। बीडीपीओ कार्यशैली से कोई खुश नहीं है। कई सरपंच भी नाराज हैं।

नियमानुसार नहीं करवा सकते शेड निर्माण : बीडीपीओ

बीडीपीओ भजनलाल का कहना है कि सीएम विंडो में शिकायत आई थी। उस आधार पर जांच करवाई गई। नियमानुसार धार्मिक स्थलों पर पंचायत समिति के फंड से शेड निर्माण नहीं करवाया जा सकता है।

जांच की मांग

शिकायत में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि बरसीन, भोडियाखेड़ा, करनोली, दरियापुर, काताखेड़ी और भिरडाना गांवों में मंदिरों और गुरुद्वारों पर आयरन शेड बनाए गए। यह कार्य सरकारी फंड से होने का आरोप है, जिससे प्रशासनिक पारदर्शिता और नियमों के पालन पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। मामले को गंभीर बताते हुए शिकायतकर्ता ने उच्च स्तरीय और निष्पक्ष जांच की मांग की है। साथ ही दोषी अधिकारियों, कर्मचारियों और पंचायत समिति से जुड़े जिम्मेदार लोगों पर विभागीय कार्रवाई करने की मांग की।

सोना-चांदी या मल्टी-एसेट फंड? निवेश से पहले जानें पूरा गणित

- उच्च रिटर्न के लालच में न करें गलती, जोखिम और रिटर्न का संतुलन ही समझदारी
- बाजार की चाल, जोखिम और लक्ष्य के हिसाब से चुनें सही विकल्प, वरना होगा नुकसान
- गोल्ड ईटीएफ, कमोडिटी फंड और मल्टी-एसेट फंड के फर्क को समझना बेहद जरूरी
- कमोडिटी फंड्स वास्तव में सीधे सोने या चांदी में निवेश नहीं करते
- ये उन कंपनियों के शेयरों में पैसा लगाते हैं जो माइनिंग, मेटल या एनर्जी सेक्टर से जुड़ी

शेयर बाजार और फिक्स्ड डिपॉजिट से आगे बढ़ते हुए अब निवेशक सोना, चांदी, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड और अन्य कमोडिटी विकल्पों की ओर तेजी से रुख कर रहे हैं। महंगाई, वैश्विक अनिश्चितता और बाजार में उतार-चढ़ाव के दौर में ये एसेट क्लास पोर्टफोलियो को संतुलन देने का काम करते हैं। लेकिन समस्या तब पैदा होती है, जब निवेशक अलग-अलग विकल्पों कमोडिटी फंड, गोल्ड-सिल्वर ईटीएफ और मल्टी-एसेट फंड को एक जैसा मान लेते हैं। यही भ्रम कई बार गलत निवेश फैसलों और नुकसान की वजह बनता है। सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि कमोडिटी फंड्स वास्तव में सीधे सोने या चांदी में निवेश नहीं करते। ये फंड उन कंपनियों के शेयरों में पैसा लगाते हैं जो माइनिंग, मेटल या एनर्जी सेक्टर से जुड़ी होती हैं। यानी इनका प्रदर्शन केवल कमोडिटी की कीमत पर नहीं, बल्कि उन कंपनियों के बिजनेस, मैनेजमेंट और मार्केट कंडीशन पर भी निर्भर करता है। इस कारण ये फंड तकनीकी रूप से इक्विटी फंड की श्रेणी में आते हैं और इनमें जोखिम भी उसी के अनुरूप अधिक होता है।

कमोडिटी फंड : हाई रिस्क, साइकिल पर निर्भर रिटर्न

कमोडिटी फंड्स का प्रदर्शन "कमोडिटी साइकिल" पर आधारित होता है। जब मेटल या एनर्जी सेक्टर में तेजी आती है, तो ये फंड अच्छा रिटर्न दे सकते हैं, लेकिन गिरावट के समय इनका प्रदर्शन तेजी से नीचे भी आ सकता है। यही वजह है कि विशेषज्ञ इन्हें लॉन्ग टर्म कोर इन्वेस्टमेंट के रूप में नहीं देखते। आमतौर पर 1 से 3 साल के लिए, किसी खास सेक्टर में तेजी का फायदा उठाने के लिए ही इनका उपयोग किया जाता है। निवेश सलाहकारों के अनुसार, पोर्टफोलियो में इनका हिस्सा 5% से 10% से ज्यादा नहीं होना चाहिए। अधिक निवेश जोखिम को बढ़ा सकता है। साथ ही, इनमें निवेश करने से पहले बाजार की स्थिति और सेक्टर ट्रेंड को समझना बेहद जरूरी है।

गोल्ड और सिल्वर ईटीएफ कीमत से जुड़ा निवेश

अगर आपका उद्देश्य सीधे सोने या चांदी की कीमतों में होने वाले बदलाव का लाभ उठाना है, तो गोल्ड ईटीएफ और सिल्वर ईटीएफ बेहतर विकल्प हैं। ये फंड फिजिकल गोल्ड या सिल्वर की कीमत को ट्रैक करते हैं, यानी इनका रिटर्न सीधे धातु की कीमत पर निर्भर करता है। इनका सबसे बड़ा फायदा यह है कि आपको फिजिकल गोल्ड खरीदने, स्टोर करने या उसकी सुरक्षा की चिंता नहीं करनी पड़ती। साथ ही, इनकी पारदर्शिता और लिक्विडिटी भी अधिक होती है, क्योंकि इन्हें शेयर बाजार में आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है। हालांकि, इनका रिटर्न आमतौर पर स्थिर और सीमित होता है। ये तेजी से मल्टीबैगर रिटर्न देने के बजाय पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का काम करते हैं। इसलिए इन्हें "सेफ हेवन" या हेजिंग टूल के रूप में देखा जाता है।

मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड : संतुलित निवेश का विकल्प

दूसरी ओर, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड उन निवेशकों के लिए बेहतर विकल्प हैं, जो एक ही निवेश में विविधता (डाइवर्सिफिकेशन) चाहते हैं। ये फंड इक्विटी, डेट और कमोडिटी तीनों एसेट क्लास में निवेश करते हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि जब एक एसेट क्लास कमजोर प्रदर्शन करता है, तो दूसरा उसे संतुलित कर देता है। उदाहरण के लिए, शेयर बाजार में गिरावट के दौरान सोना बेहतर प्रदर्शन कर सकता है, जिससे कुल पोर्टफोलियो पर असर कम होता है।

पिछले आंकड़ों पर न जाएं

बाजार में आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड, एसबीआई म्यूचुअल फंड और क्वांट म्यूचुअल फंड जैसे कई कमोडिटी या मल्टी-एसेट फंड्स उपलब्ध हैं, जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में 20-22% तक का रिटर्न दिया है, लेकिन विशेषज्ञ साफ कहते हैं कि केवल पिछले प्रदर्शन के आधार पर निवेश का फैसला लेना गलत हो सकता है। कमोडिटी सेक्टर स्वभाव से ही अस्थिर होता है। इसलिए इसमें औसतन 10-12% सीएजीआर की उम्मीद रखना ज्यादा व्यावहारिक है।

समझदारी से करें संतुलन

निवेश का कोई एक "सही" विकल्प नहीं होता। यह पूरी तरह आपके लक्ष्य, जोखिम क्षमता और निवेश अवधि पर निर्भर करता है। गोल्ड ईटीएफ और मल्टी-एसेट फंड्स आम निवेशकों के लिए बेहतर और सुरक्षित विकल्प माने जाते हैं, जबकि कमोडिटी फंड्स केवल समझदार और अनुभवी निवेशकों के लिए ही उपयुक्त हैं। अंततः, एक संतुलित पोर्टफोलियो ही लंबे समय में बेहतर रिटर्न और कम जोखिम सुनिश्चित करता है। इसलिए निवेश से पहले जरूरतें समझें, जल्दबाजी से बचें और जहां जरूरी हो, वित्तीय सलाहकार की मदद लें ताकि आपका पैसा सही दिशा में काम कर सके।

स्मॉलकैप एक माह में 10% उछला
जोखिम भी उतना ही बढ़ा

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

पिछले एक महीने में स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। औसतन 10% तक का रिटर्न देकर इस सेगमेंट ने लार्ज और मिडकैप फंड्स को पीछे छोड़ दिया है। ऐसे में कई निवेशकों के मन में सवाल उठ रहा है क्या यह तेजी लंबे समय के बुल रन की शुरुआत है या फिर यह सिर्फ गिरावट के बाद आई एक अस्थायी रिकवरी? विशेषज्ञों का मानना है कि इस तेजी को समझदारी से देखना जरूरी है, क्योंकि जल्दबाजी में लिया गया फैसला नुकसान भी करा सकता है। हालिया आंकड़ों के मुताबिक, स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स ने पिछले एक महीने में औसतन करीब 10% रिटर्न दिया है। कुछ फंड्स ने तो इससे भी ज्यादा प्रदर्शन किया है, जिससे निवेशकों का भरोसा इस सेगमेंट में फिर से बढ़ा है। हालांकि, सभी फंड्स का प्रदर्शन एक जैसा नहीं रहा। जहां कुछ फंड्स ने दो अंकों का रिटर्न दिया, वहीं कुछ ने नेगेटिव रिटर्न भी दिखाया। इससे साफ है कि यह तेजी पूरे सेगमेंट में समान रूप से नहीं फैली है।

तेजी की वजह: लिक्विडिटी और एसआईपी का सहारा

विशेषज्ञों के अनुसार, स्मॉलकैप फंड्स में आई इस तेजी के पीछे कई कारण हैं। बाजार में बढ़ती लिक्विडिटी, निवेशकों की जोखिम लेने की क्षमता में सुधार और लगातार आने वाला एसआईपी निवेश इस उछाल को सपोर्ट कर रहा है। जब बाजार में नकदी ज्यादा होती है, तो उसका असर छोटे शेयरों पर जल्दी दिखाई देता है। इसी वजह से स्मॉलकैप शेयरों में तेजी अक्सर तेज और अचानक होती है।

क्या यह स्थायी बुल रन है या शॉर्ट टर्म रिकवरी?

यहीं सबसे बड़ा सवाल खड़ा होता है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि फिलहाल यह तेजी एक शॉर्ट टर्म रिकवरी ज्यादा लगती है, न कि लंबी अवधि की स्थायी तेजी। स्मॉलकैप सेगमेंट में उतार-चढ़ाव ज्यादा होता है। गिरावट के बाद तेज उछाल आना आम बात है। इसलिए केवल एक महीने के रिटर्न के आधार पर निवेश का फैसला लेना जोखिम भरा हो सकता है।

वैल्यूएशन बनी चिंता

हालिया तेजी के बाद स्मॉलकैप शेयरों की वैल्यूएशन फिर से ऊंची नजर आने लगी है। उदाहरण के तौर पर, निफ्टी स्मॉलकैप 100 का फॉरवर्ड पी/ई अपने लंबे औसत से ऊपर चल रहा है। इसका मतलब है कि शेयरों की कीमतें उनकी कमाई के मुकाबले ज्यादा हो चुकी हैं। ऐसे में आगे रिटर्न सीमित हो सकता है या फिर बाजार में करेक्शन देखने को मिल सकता है।

हर निवेशक के लिए सही नहीं

स्मॉलकैप फंड्स हाई रिस्क कैटेगरी में आते हैं। इनमें तेजी के साथ-साथ गिरावट भी उतनी ही तेज होती है। इसलिए यह हर निवेशक के लिए उपयुक्त नहीं हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि अगर आपका निवेश समय 7 से 10 साल या उससे ज्यादा है, तभी इस सेगमेंट में निवेश करना चाहिए।

एसआईपी और एसटीपी से एंट्री

स्मॉलकैप में एकमुश्त निवेश करने के बजाय एसआईपी या एसटीपी के जरिए धीरे-धीरे निवेश करना बेहतर रणनीति मानी जाती है। इससे बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम होता है और आप अलग-अलग स्तरों पर निवेश कर पाते हैं, जिससे औसत लागत संतुलित रहती है।

पोर्टफोलियो में सीमित हिस्सा

एक संतुलित निवेश रणनीति के तहत स्मॉलकैप फंड्स का हिस्सा पोर्टफोलियो में सीमित रखना चाहिए। आमतौर पर 10% से 20% तक का एक्सपोजर पर्याप्त माना जाता है, जो जोखिम और रिटर्न के बीच संतुलन बनाए रखता है। इसके अलावा, फ्लेक्सी कैप और मल्टीकैप फंड्स जैसे विकल्प भी बेहतर संतुलन प्रदान कर सकते हैं।

पीछे भागना क्यों खतरनाक

अक्सर निवेशक हालिया प्रदर्शन देखकर आकर्षित हो जाते हैं और तेजी से निवेश कर देते हैं। लेकिन 10% जैसे अल्पकालिक रिटर्न का पीछा करना सही रणनीति नहीं है। बाजार में ऐसे मूवमेंट अस्थायी होते हैं और समय के साथ संतुलित हो जाते हैं। इसलिए केवल हालिया रिटर्न देखकर निवेश करना नुकसान का कारण बन सकता है।

अवसर है, पर अलर्ट रहें

स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स में हालिया तेजी निश्चित रूप से ध्यान देने योग्य है, लेकिन इसे "पैसे छापने का मौका" मानना जल्दबाजी होगी। लंबी अवधि के निवेशक एसआईपी के जरिए इसमें धीरे-धीरे निवेश कर सकते हैं, लेकिन पोर्टफोलियो में संतुलन बनाए रखना बेहद जरूरी है।

एमएफ के नाम में छिपा पूरा खेल : 'डायरेक्ट रेगूलर और ग्रोथ' का सही मतलब समझें

म्यूचुअल फंड में निवेश करना आजकल बहुत आसान हो गया है, लेकिन सही फंड का चुनाव करना आज भी कई लोगों के लिए बड़ी चुनौती है। बता दें कि जब आप किसी ऐप या वेबसाइट पर फंड सर्च करते हैं, तो एक ही नाम के कई ऑप्शन नजर आते हैं। दरअसल, इन नामों में निवेश की पूरी रणनीति छिपी होती है। अगर आप इन बेसिक शब्दों का मतलब समझ लेते हैं, तो आप अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार सही फंड का चुनाव कर सकते हैं।

निवेश की कैटेगरी को पहचानें

म्यूचुअल फंड के नाम की शुरुआत एएमसी से होती है, जैसे एसबीआई, अक्षम या आईसीआईसीआई प्रूडेंटियल। यह वो संस्था है जो आपके पैसे को मैनेज करती है। नाम के अगले हिस्से में फंड की कैटेगरी होती है। जैसे लार्ज कैप का अर्थ है कि पैसा देश की टॉप 100 सुरक्षित कंपनियों में लगेगा। वहीं, स्मॉल कैप या मिड कैप में पैसा उन कंपनियों में लगाया जाता है जो तेजी से बढ़ रही हैं, हालांकि इनमें जोखिम थोड़ा ज्यादा होता है।

खर्च और मुनाफे का अंतर

फंड के नाम में डायरेक्ट और रेगूलर सबसे अहम शब्द हैं। डायरेक्ट का मतलब है कि आप सीधे फंड हाउस के साथ निवेश कर रहे हैं। इसमें कोई एजेंट नहीं होता, इसलिए एक्सपेंस रेशियो कम होता है और आपका मुनाफा बढ़ जाता है। इसके विपरीत, रेगूलर प्लान किसी बैंक या ब्रोकर के जरिए लिया जाता है, जहां आपको दी जाने वाली सुविधाओं के बदले कंपनी एजेंट को कमीशन देती है, जिससे आपका शुद्ध मुनाफा थोड़ा कम हो जाता है।

रिटर्न पाने का तरीका चुनें

नाम के आखिरी हिस्से में आपको ग्रोथ या आईडीडब्ल्यूसी लिखा मिलेगा। बता दें कि अगर आप लंबे समय के लिए पैसा जोड़ना चाहते हैं, ग्रोथ ऑप्शन चुनें क्योंकि इसमें मुनाफे पर कंपाउंडिंग का लाभ मिलता है। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि आपको निवेश के बीच-बीच में कुछ कमाई मिलती रहे, तो आईडीडब्ल्यूसी प्लान लिया जा सकता है।

स्मार्ट निवेशक बनने के लिए जरूरी टिप्स

म्यूचुअल फंड चुनते समय सिर्फ पिछले रिटर्न को ना देखें, बल्कि इन चारों यानी एएमसी, कैटेगरी, प्लान टाइप और रिटर्न मोड को परखें। अपनी रिस्क लेने की क्षमता और समय सीमा के आधार पर ही सही ऑप्शन का चुनाव करें। हमेशा कोशिश करें कि डायरेक्ट और ग्रोथ ऑप्संश पर गौर करें जिससे लंबी समय में आपकी जमा पूंजी पर कमीशन का बोझ न पड़े और आपको अधिकतम लाभ मिल सके। म्यूचुअल फंड का नाम भले ही जटिल लगे, लेकिन इसमें निवेश का पूरा ब्लूप्रिंट छिपा होता है। म्यूचुअल फंड में सफल होने के लिए जरूरी है कि आप इन बुनियादी शब्दों को समझें और सोच-समझकर फैसला लें। सही जानकारी के साथ किया गया निवेश ही लंबे समय में संपत्ति निर्माण का मजबूत आधार बनता है।

बिजनेस डेस्क

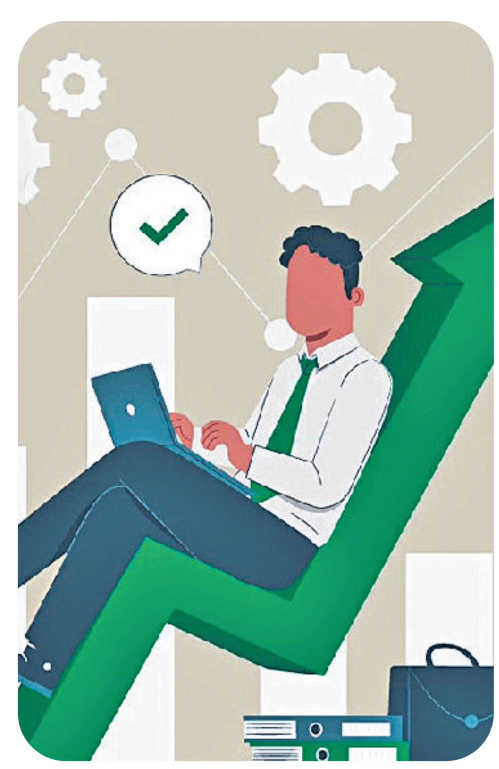

अब आईटीआर में गलती की तो पड़ सकती है भारी

गलत इनकम बताई तो 200% तक जुर्माना

- छोटी चूक भी बन सकती है बड़ी सजा का कारण
- जानबूझकर जानकारी छिपाने पर दोगुना तक जुर्माना
- लेट फाइलिंग व दस्तावेजों में कमी पर भी कड़ा प्रावधान

बिजनेस डेस्क

आयकर रिटर्न यानी आईटीआर भरना अब केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं रह गया है, बल्कि यह पूरी तरह जिम्मेदारी और सतर्कता का काम बन चुका है। आयकर विभाग ने असेसमेंट ईयर 2026–27 के लिए नया पेनल्टी फ्रेमवर्क लागू किया है, जिसमें गलत जानकारी देने वाले टैक्सपेयर्स पर कड़ी कार्रवाई का प्रावधान किया गया है। इस नए सिस्टम का मकसद साफ है। टैक्स अनुपालन को सख्ती से लागू करना और किसी भी तरह की लापरवाही या हेरफेर को हतोत्साहित करना।

गलत इनकम दिखाना पड़ सकता है भारी

नए नियमों के तहत यदि कोई टैक्सपेयर्स अपनी वास्तविक आय से कम इनकम दिखाता है, तो उसे देय टैक्स पर 50 प्रतिशत तक जुर्माना भरना पड़ सकता है। यह जुर्माना उन मामलों में लागू होता है जहां गलती को अनजाने में हुई चूक माना जाता है। लेकिन अगर जांच में यह साबित हो जाता है कि इनकम को जानबूझकर छिपाया गया है या गलत जानकारी दी गई है, तो सजा और भी कड़ी हो जाती है। ऐसे मामलों में पेनल्टी बढ़ाकर 200 प्रतिशत तक की जा सकती है। यानी जितना टैक्स बचाने की कोशिश की गई, उसका दोगुना तक जुर्माना देना पड़ सकता है।

जानबूझकर गलती और सामान्य चूक में फर्क

सरकार ने इस बार नियमों में यह स्पष्ट किया है कि जानबूझकर की गई गलती और सामान्य त्रुटि में अंतर किया जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति ने भूलवश कोई इनकम जोड़ना रह गया, तो उसे उतनी सख्ती से नहीं देखा जाएगा जितना कि किसी ऐसे मामले को जहां दस्तावेज छिपाए गए हों या फर्जी एंट्री की गई हो। यह अंतर इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे ईमानदार टैक्सपेयर्स को राहत मिलती है, जबकि धोखाधड़ी करने वालों पर सख्ती बढ़ती है।

लेट आईटीआर पर भी सख्त नियम

समय पर आईटीआर फाइल न करने पर भी अब जुर्माने का प्रावधान पहले से स्पष्ट और कड़ा कर दिया गया है। यदि कोई व्यक्ति तय समय सीमा के बाद आईटीआर भरता है, तो उसे अधिकतम 5000 रुपये तक का जुर्माना देना पड़ सकता है। हालांकि, जिन टैक्सपेयर्स की सालाना आय 5 लाख रुपये तक है, उनके लिए राहत देते हुए जुर्माना 1000 रुपये तक सीमित रखा गया है। इसका उद्देश्य छोटे करदाताओं को अनावश्यक बोझ से बचाना है, लेकिन समय पर फाइलिंग की जिम्मेदारी से छूट नहीं दी गई है।

टीडीएस और अन्य दस्तावेजों में देरी भी महंगी

सिर्फ आईटीआर ही नहीं, बल्कि टीडीएस और अन्य जरूरी स्टेटमेंट समय पर जमा न करने पर भी सख्त कार्रवाई का प्रावधान है। ऐसे मामलों में 200 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से जुर्माना लगाया जा सकता है, जो समय के साथ बड़ी राशि में बदल सकता है। इससे साफ है कि टैक्स सिस्टम अब पूरी तरह समयबद्ध और अनुशासित हो चुका है, जहां हर देरी की कीमत चुकानी पड़ सकती है।

टैक्स बकाया रखने पर भी कार्रवाई

यदि कोई व्यक्ति अपना सेल्फ-असेसमेंट टैक्स समय पर नहीं चुकाता है, तो उस पर भी पेनल्टी लग सकती है। यह पेनल्टी असेसिंग ऑफिसर द्वारा तय की जाती है और कई मामलों में बकाया टैक्स के बराबर तक हो सकती है। गंभीर मामलों में, खासकर जब जांच के दौरान छिपी हुई आय सामने आती है, तो 10 प्रतिशत से लेकर 60 प्रतिशत तक अतिरिक्त जुर्माना भी लगाया जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि गलती कितनी गंभीर है और उसे कब उजागर किया गया।

अन्य उल्लंघनों पर कड़ी नजर

नए नियम केवल इनकम छिपाने तक सीमित नहीं हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने अकाउंट बुक्स ठीक से नहीं रखता, जरूरी ऑडिट नहीं कराता, दस्तावेज समय पर जमा नहीं करता या कैश ट्रांजैक्शन के नियमों का उल्लंघन करता है, तो उस पर भी जुर्माना लगाया जा सकता है। कुछ मामलों में यह जुर्माना लेन-देन की पूरी राशि के बराबर तक हो सकता है, जो किसी भी व्यवसाय या व्यक्ति के लिए बड़ा वित्तीय झटका साबित हो सकता है।

राहत के प्रावधान भी मौजूद

हालांकि सख्ती के बीच सरकार ने कुछ राहत के विकल्प भी दिए हैं। यदि कोई टैक्सपेयर्स यह साबित कर देता है कि उससे हुई गलती किसी वाजिब कारण से हुई थी, जैसे तकनीकी समस्या या वास्तविक भूल, तो उस पर पेनल्टी नहीं लगाई जाएगी। इसके अलावा, कुछ मामलों में अपील और स्पष्टीकरण के आधार पर भी जुर्माने में राहत मिल सकती है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि ईमानदार करदाता अनावश्यक रूप से परेशान न हों।

सतर्कता ही बचाव का सबसे बड़ा तरीका

इन नए नियमों के बाद यह साफ हो गया है कि आईटीआर भरते समय लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं है। हर जानकारी को सही दस्तावेजों के साथ जांचकर ही भरना चाहिए। विशेषज्ञों की सलाह है कि यदि टैक्स फाइलिंग को लेकर किसी भी तरह का संदेह हो, तो पेशेवर सलाह लेना बेहतर है। छोटी सी गलती भी बड़े जुर्माने में बदल सकती है, इसलिए सतर्क रहना ही सबसे सुरक्षित विकल्प है।

आयकर विभाग का स्पष्ट संदेश

नए पेनल्टी नियम यह संकेत देते हैं कि टैक्स सिस्टम अब ज्यादा पारदर्शी और सख्त हो चुका है। आयकर विभाग का स्पष्ट संदेश है ईमानदारी से टैक्स भरें या भारी जुर्माने के लिए तैयार रहें। ऐसे में समझदारी इसी में है कि जल्दबाजी या लापरवाही से बचते हुए पूरी सावधानी के साथ आईटीआर फाइल किया जाए, क्योंकि अब छोटी गलती भी बड़ी सजा में बदल सकती है।

25,000 की एसआईपी के लिए 3 से 5 फंड ही काफी

छोटी एसआईपी में बंटवारे से कंपाउंडिंग पर पड़ता है असर

म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो में भीड़ बढ़ाना पड़ सकता है भारी, घट सकता है रिटर्न

बिजनेस डेस्क

अक्सर निवेशक यह मान लेते हैं कि ज्यादा म्यूचुअल फंड्स में पैसा लगाने से जोखिम कम हो जाता है और रिटर्न बेहतर मिलता है। इसी सोच के चलते कई लोग 10 से 12 या उससे भी ज्यादा फंड्स में एसआईपी शुरू कर देते हैं। लेकिन हकीकत इससे उलट है। जरूरत से ज्यादा फंड्स रखने से न तो जोखिम कम होता है और न ही रिटर्न बढ़ता है, बल्कि आपका पोर्टफोलियो उलझ जाता है और मुनाफा कम हो सकता है। खासतौर पर अगर आपकी मासिक एसआईपी 25,000 रुपये के आसपास है, तो 3 से 5 अच्छे फंड्स का चयन ही बेहतर रणनीति मानी जाती है।

ज्यादा फंड्स रखना क्यों नुकसान का सौदा

म्यूचुअल फंड निवेश का मूल सिद्धांत है। विविधता, लेकिन कई निवेशक इस सिद्धांत को गलत तरीके से समझ लेते हैं। वे सोचते हैं कि अलग-अलग (एसेट मैनेजमेंट कंपनी) के ज्यादा फंड्स खरीदना ही विविधता है, जबकि ऐसा नहीं है। अगर आपके पास 10–12 फंड्स हैं, तो संभव है कि उनमें से कई एक ही सेक्टर या एक जैसे शेयरों में निवेश कर रहे हों। ऐसे में आपका पोर्टफोलियो देखने में तो बड़ा लगता है, लेकिन असल में वह विविध नहीं होता। विशेषज्ञ मानते हैं कि सीमित और चुने हुए फंड्स के जरिए बेहतर नियंत्रण और संतुलन बनाना ज्यादा आसान होता है। इससे निवेश की दिशा स्पष्ट रहती है और अनावश्यक जटिलता से बचाव होता है।

अलग नाम, लेकिन निवेश वही

जब आप कई फंड्स में निवेश करते हैं, तो एक बड़ी समस्या होती है—पोर्टफोलियो ओवरलैप। मान लीजिए आपने दो या तीन लार्ज-कैप फंड्स ले रखे हैं। इनमें से हर फंड में रिलायंस, इन्फोसिस या एचडीएफसी बैंक जैसे बड़े शेयर टॉप होल्डिंग में हो सकते हैं। इसका मतलब है कि आप अलग-अलग फंड्स के जरिए एक ही कंपनियों में बार-बार निवेश कर रहे हैं।

इससे दो नुकसान होते हैं

जोखिम कम होने की बजाय बढ़ सकता है, क्योंकि बाजार गिरने पर सभी फंड्स एक साथ प्रभावित होते हैं। आप हर फंड का अलग-अलग एक्सपेंस रेशियो (खर्च) भी देते हैं, जिससे कुल रिटर्न घटता है। इस तरह, ज्यादा फंड्स रखने से निवेश में विविधता का भ्रम तो बनता है, लेकिन असल फायदा नहीं मिलता।

छोटी एसआईपी से कंपाउंडिंग कमजोर

यदि 25,000 की मासिक एसआईपी को आप 8 या 10 फंड्स में बांटते हैं, तो हर फंड में बहुत कम राशि जाती है। उदाहरण के तौर पर 8 फंड्स में निवेश करने पर हर फंड में सिर्फ 3,125 ही जाएंगे। इतनी छोटी राशि में कंपाउंडिंग का प्रभाव कमजोर पड़ जाता है। लंबे समय में बड़ा कॉर्पस बनाने के लिए जरूरी है कि हर फंड में पर्याप्त निवेश हो, ताकि उसका ग्रोथ प्रभावी तरीके से दिखाई दे। अगर यही 25,000 रुपये आप 3 या 4 फंड्स में लगाते हैं, तो हर फंड में 6,000 से 8,000 रुपये तक का निवेश होगा, जिससे रिटर्न बेहतर तरीके से बढ़ सकता है।

ट्रैकिंग और मैनेजमेंट बन जाता है मुश्किल

ज्यादा फंड्स का एक और बड़ा नुकसान है—उन्हें ट्रैक करना कठिन हो जाता है। हर फंड का प्रदर्शन अलग होता है। कुछ अच्छा रिटर्न देते हैं, तो कुछ कमजोर प्रदर्शन करते हैं। अगर आपके पास बहुत ज्यादा फंड्स हैं, तो यह समझना मुश्किल हो जाता है कि कौन सा फंड अच्छा कर रहा है और किसे बदलने की जरूरत है। इसके अलावा, कमजोर फंड्स आपके पूरे पोर्टफोलियो के रिटर्न को नीचे खींच लेते हैं। इसे "डाइल्यूशन" कहा जाता है। यानी अच्छे फंड्स का फायदा भी पूरी तरह नहीं मिल पाता।

आदर्श पोर्टफोलियो कैसा हो

विशेषज्ञों के अनुसार 25,000 रुपये की एसआईपी के लिए 3 से 5 फंड्स का पोर्टफोलियो पर्याप्त होता है। इससे निवेश में संतुलन बना रहता है और जोखिम भी नियंत्रित रहता है। एक संतुलित पोर्टफोलियो के लिए आप इन कैटेगरी पर विचार कर सकते हैं।

- लार्ज-कैप या इंडेक्स फंड
  स्थिरता के लिए
- लार्ज एंड मिड-कैप फंड
  ग्रोथ और स्थिरता का मिश्रण
- मल्टी-कैप या फ्लेक्सी-कैप फंड
  अलग-अलग मार्केट कैप में निवेश
- एग्रेसिव हाइब्रिड फंड
  इक्विटी और डेट का संतुलन
- ईएलएसएस फंड (टैक्स सेविंग)
  टैक्स बचत के साथ निवेश
- हर निवेशक अपनी जोखिम क्षमता, लक्ष्य और समय अवधि के अनुसार इन कैटेगरी में 3–5 फंड्स चुन सकता है।

कैसे सुधारें अपना मौजूदा पोर्टफोलियो

अगर आपके पोर्टफोलियो में पहले से ही बहुत ज्यादा फंड्स हैं, तो घबराने की जरूरत नहीं है। आप इसे धीरे-धीरे सुधार सकते हैं। सबसे पहले, ओवरलैप चेक करें। इसके लिए कई ऑनलाइन टूल्स उपलब्ध हैं, जो बताते हैं कि आपके फंड्स में कितनी समानता है। इसके बाद उन फंड्स को पहचानें जो लगातार 2–3 साल से अपने बेंचमार्क से कमजोर प्रदर्शन कर रहे हैं। ऐसे फंड्स को धीरे-धीरे बाहर निकालें। ध्यान रखें कि एक ही कैटेगरी के कई फंड्स रखने से बचें। हर कैटेगरी से एक अच्छा और भरोसेमंद फंड चुनना बेहतर होता है। साथ ही, पोर्टफोलियो में बदलाव एकदम से न करें, बल्कि चरणबद्ध तरीके से करें ताकि बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम पड़े।

विविधता का सही मतलब समझें

असली विविधता का मतलब यह नहीं है कि आप ज्यादा से ज्यादा फंड्स खरीद लें। बल्कि इसका मतलब है कि आप अलग-अलग एसेट क्लास और कैटेगरी में निवेश करें। अगर आपने अलग-अलग कैटेगरी के 3–5 फंड्स चुने हैं, तो यह पर्याप्त विविधता देता है। इसके विपरीत, एक ही कैटेगरी के 8–10 फंड्स रखना सिर्फ जटिलता बढ़ाता है। इसलिए निवेश करते समय "कम लेकिन बेहतर" की रणनीति अपनाना ज्यादा समझदारी भरा कदम है।

यह रखें ध्यान

म्यूचुअल फंड निवेश में संख्या नहीं, गुणवत्ता मायने रखती है। ज्यादा फंड्स रखने से पोर्टफोलियो मजबूत नहीं होता, बल्कि उलझन बढ़ती है और रिटर्न पर असर पड़ता है। 25,000 रुपये की एसआईपी के लिए 3 से 5 अच्छी तरह चुने गए फंड्स ही पर्याप्त हैं। इससे न केवल कंपाउंडिंग का फायदा बेहतर मिलता है, बल्कि निवेश को समझना और मैनेज करना भी आसान रहता है। अंततः, सफल निवेश वही है जो सरल, संतुलित और आपके लक्ष्यों के अनुरूप हो।

विश्व मलेरिया दिवस पर विभिन्न स्थानों से निकाली जागरूकता रैली

मच्छरों से बचाव ही मलेरिया रोकने का सबसे असरदार तरीकाः डॉ. गर्ग

उप सिविल सर्जन डॉ. अभिषेक गर्ग ने लक्षण और बचाव उपाय बताए

खास बातें

- मरीजों और परिजनों को अस्पताल में सुविधाओं की जानकारी दी
- घरों और आसपास कहीं भी पानी जमा न होने दें

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

हरियाणा स्वास्थ्य विभाग की ओर से नागरिक अस्पताल में विश्व मलेरिया दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम हुआ। इस दौरान अस्पताल परिसर में आने वाले मरीजों और उनके परिजनों को मलेरिया के लक्षण, बचाव के उपाय और सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं की जानकारी दी गई। उप सिविल सर्जन डॉ. अभिषेक गर्ग ने बताया कि मलेरिया गंदे और ठहरे हुए पानी में पनपने वाले मच्छरों के कारण फैलता है, इसलिए इसके रोकथाम के लिए साफ-सफाई सबसे जरूरी है। उन्होंने कहा कि लोग अपने घरों और आसपास कहीं भी पानी जमा न होने दें, क्योंकि यही मच्छरों के पनपने का सबसे बड़ा कारण है।

ओढ़ां। जागरुकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए।

विद्यार्थियों ने घर- घर जाकर लोगों को किया जागरूक

ओढ़ां। विश्व मलेरिया दिवस पर स्वास्थ्य विभाग हरियाणा सरकार के तत्वाधान में पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ओढ़ा में एक जागरूकता कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर स्कूल चिकित्सालय, ओढ़ा से सुपरवाइजर जितेंद्र सिंह विशेष रूप से मौजूद थे। उन्होंने विद्यार्थियों को मलेरिया रोग के प्रसार के कारणों व बचाव के तरीकों पर विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए मादा एनोफिलिज मच्छर के काटने से फैलने वाले इस परजीवी रोग के बारे में जागरूक किया। इस दौरान रमेश कुमार प्रवक्ता शारीरिक शिक्षक ने विद्यार्थियों को बताया कि इस मौसम में मच्छरों को भगाने वाली क्रीम का प्रयोग करें और लक्षण दिखने पर डॉक्टर की सलाह लें और ब्लड टेस्ट अवश्य करवाएं। इस अवसर पर एक जागरूकता रैली निकाली गई जिसे प्रिाचार्य विक्रमजीत सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस रैली में शामिल विद्यार्थियों ने घर घर जाकर लोगों को मलेरिया रोग के बारे में जागरूक किया। इस दौरान कक्षा 1 से 11 तक के विद्यार्थियों द्वारा निबंध लेखन का कार्य किया। इस अवसर पर सुमित कुमार, सरिता रानी, सुमनलता, सवीना रानी, सुमन लता, जोगेंद्र सिंह, जगतीत सिंह, बूटा सिंह, मांगे राम, जगराज सिंह आदि मौजूद थे।

टंकियों को हमेशा ढककर रखें

उन्होंने कहा कि घर की पानी की टंकियों को हमेशा ढककर रखें और सप्ताह में कम से कम एक बार कूलर, गमले, छत पर पड़े बेकार टायर, फ्रिज की ट्रे, पशु-पक्षियों के पानी के बर्तन सहित सभी पानी के स्रोतों को खाली कर रगड़कर साफ करना बेहद जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि किसी भी प्रकार के बुखार को नजरअंदाज न करें, क्योंकि समय पर जांच न कराने से मलेरिया गंभीर रूप ले सकता है। नागरिक अस्पताल में मलेरिया की जांच और उपचार की सुविधा पूरी तरह निःशुल्क उपलब्ध है। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बताया कि हर रविवार ड्राई डे के रूप में मनाते हुए पानी के सभी स्रोतों को खाली कर उल्टा करके सुखाना सुनिश्चित करें। इस अवसर पर राजेंद्र कुमार, राजेश सरदाना, पुष्कर दत्त, लाभ सिंह, धीरज कुमार, वरुण कुमार, केवल कृष्ण और अभिषेक आदि मौजूद रहे।

राजकीय विद्यालय में विद्यार्थियों को मलेरिया से बचाव, स्वच्छता तथा स्वास्थ्य संबंधी दी जानकारी

रतिया। विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों को मलेरिया से बचाव, स्वच्छता तथा स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक जानकारी दी गई। हेल्थ इंस्पेक्टर राजेश कुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि मलेरिया से बचाव के लिए अपने आसपास साफ-सफाई रखना, पानी जमा न होने देना तथा मच्छरों से बचाव के उपाय अपनाना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि रात के समय मच्छरदानी का प्रयोग करें, खिड़की-दरवाजों पर जाली लगवाएं तथा समय-समय पर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करवाएं। स्कूल प्रिंसिपल नंदकिशोर ने विद्यार्थियों से स्वच्छता को जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यदि हम सभी जागरूक होकर सफाई रखें तो मलेरिया जैसी बीमारियों को आसानी से रोका जा सकता है। प्राध्यापक मनोज कुमार ने भी विद्यार्थियों को स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने और स्वच्छ वातावरण बनाए रखने के लिए प्रेरित किया।

मलेरिया के प्रति जागरूक रहें : डॉ. सतीश बंसल

फतेहाबाद। राष्ट्रीय मलेरिया दिवस के अवसर पर श्री बालाजी चिल्ड्रेन हॉस्पिटल के बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. सतीश बंसल ने नागरिकों को सतर्क करते हुए कहा कि मलेरिया जैसी गंभीर बीमारी के प्रति जागरूक रहें और इसके बचाव के उपाय अपनाएं। मलेरिया एक संक्रामक रोग है, जो संक्रमित मादा एनोफिलीज मच्छर के काटने से फैलता है। इसके प्रमुख लक्षणों में तेज बुखार, ठंड लगना, पसीना आना, सिरदर्द, उल्टी तथा शरीर में कमजोरी शामिल हैं। समय पर इलाज न मिलने पर यह बीमारी बच्चों और बुजुर्गों के लिए जानलेवा भी हो सकती है। इससे बचाव के लिए अपने घर और आसपास पानी जमा न होने दें, मच्छरदानी का उपयोग करें, पूरी बांह के कपड़े पहनें तथा साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। बुखार होने पर तुरंत नजदीकी चिकित्सक से परामर्श लें। एक जागरूक समाज ही स्वस्थ समाज का निर्माण करता है। आइए, मिलकर मलेरिया मुक्त भारत की दिशा में कदम बढ़ाएं।

फतेहाबाद। विद्यार्थियों को मच्छर जनित बीमारियों की रोकथाम के लिए जागरूक करते हुए स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को किया जागरूक

फतेहाबाद। सिविल सर्जन डॉ. बुधराम की अध्यक्षता में विश्व मलेरिया दिवस मनाया गया। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिले में जागरूकता अभियान चलाया गया। शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी डॉ. हनुमान सिंह के नेतृत्व में विभिन्न विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को मलेरिया, डेंगू एवं चिकनगुनिया के प्रति प्रश्नोत्तरी, ध्वनि प्रसारण एवं व्याख्यान के माध्यम से जागरूक किया गया। विद्यार्थियों द्वारा रैली निकालकर भी आमजन को जागरूक किया गया। डॉ. हनुमान सिंह ने बताया कि मलेरिया एक गंभीर रोग है तथा बुखार होने पर तुरंत जांच कराना व पूर्ण उपचार लेना आवश्यक है। उप सिविल सर्जन डॉ. नीरज खटक ने बताया कि जिले में मलेरिया के मामलों में कमी आई है तथा यह रोग मादा एनोफिलीज मच्छर के काटने से फैलता है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा अप्रैल से अक्टूबर तक तीव्र ज्वर सर्वेक्षण एवं स्रोत नियंत्रण गतिविधियां चलाई जा रही हैं। साथ ही जलभराव रोकने, नियमित सफाई रखने तथा मच्छरदानी के उपयोग की अपील की गई है।

विश्व मलेरिया दिवस पर जागरूकता कार्यशाला

ओढ़ां। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बप्पां में शनिवार को विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर एक जागरूकता कार्यशाला हुई। मुख्य वक्ता नरेश कुमार ग्रोवर ने बताया कि विश्व मलेरिया दिवस प्रतिवर्ष 25 अप्रेल को मनाया जाता है। इसकी शुरुआत वर्ष 2007 में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य मलेरिया की रोकथाम और इसके प्रति जागरूकता फैलाना है। उन्होंने कहा कि मलेरिया मच्छरों के काटने से फैलने वाली एक खतरनाक बीमारी है, जो मुख्यतः गंदगी और जमा पानी के कारण फैलती है। इसलिए हमें हमेशा स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि कभी भी खुले में गंदगी न फैलाएं और कहीं भी पानी इक_ा न होने दें, क्योंकि यही मच्छरों के पनपने का मुख्य कारण है। उन्होंने बताया कि यदि किसी व्यक्ति को बार-बार तेज बुखार आना, ठंड लगना, पसीना आना, सिरदर्द, शरीर में दर्द या कमजोरी जैसे लक्षण दिखाई दें, तो यह मलेरिया के संकेत हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में तुरंत चिकित्सक से परामर्श लेकर उचित दवाई लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मलेरिया से बचाव के लिए पूरी बाजू के कपड़े पहनना, मच्छरदानी का प्रयोग करना और घर के आसपास साफ-सफाई बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से बांधा समां

सिरसा। राजेंद्रा इंस्टिट्यूट में दो दिवसीय वार्षिक समारोह 'अमलगम-2026' बड़े ही उत्साह, उमंग और रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम के पहले दिन पोस्टर, रंगोली एवं क्विज प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें पोस्टर प्रतियोगिता (नर्सिंग) में अनीशा और गायत्री ने प्रथम स्थान हासिल किया जबकि चरणदीप और रवि ने संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वहीं पोस्टर प्रतियोगिता (फार्मेसी) में तमन्ना और वंदना ने प्रथम स्थान तथा दीपेश और हर्षिता ने द्वितीय स्थान हासिल किया। क्विज प्रतियोगिता में पिल्स एंड पल्स टीम (चरणदीप, नवजोत, अनीशा, वंश और नीलम) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि वेलनेस वॉरियर्स टीम (रवि, विजयलक्ष्मी, गगनदीप , देवांशु और वंदना) द्वितीय स्थान पर रही। रंगोली प्रतियोगिता (नर्सिंग) में अंजना और दीक्षा ने प्रथम तथा अरमान और कुमकुम ने द्वितीय स्थान हासिल किया। वहीं रंगोली प्रतियोगिता (फार्मेसी) में हरीश और संगम ने प्रथम स्थान तथा परम और निशा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। दूसरे दिन कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि डॉ. रक्षित अग्रवाल, सोसायटी सदस्य पवन बागला एवं देवेंद्र बंसल शामिल हुए जिनका संस्थान के चेयरमैन एन.के. गुप्ता, सचिव पुलकित गुप्ता, कॉलेज ऑफ फार्मेसी के प्राचार्य डॉ. संजीव कालरा तथा कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या कुलविंदर कौर ने भव्य अभिनंदन किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने हरियाणवी, पंजाबी, राजस्थानी लोक नृत्य, महिला सशक्तिकरण पर आधारित कोरियोग्राफी, कॉलेज लाइफ थीम प्रस्तुति, रेट्रो पैरोडी, फंकी डांस, गिद्धा, लुड्डी तथा देशभक्ति पर आधारित कोरियोग्राफी प्रस्तुत की। फार्मेसी और नर्सिंग विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत भांगड़ा ने दर्शकों को विशेष रूप से आकर्षित किया।

प्रतिनिधिमंडल ने सांसद सुभाष बराला को ज्ञापन सौंपा, कल से की जाएगी भूख हड़ताल

दमकल कर्मचारियों ने शहीदों के लिए न्याय मांगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

हरियाणा अग्निशमन विभाग और नगर पालिका कर्मचारी संघ के आह्वान पर अपनी लंबित मांगों को लेकर आंदोलनरत दमकल कर्मचारियों ने अब केंद्र और राज्य सरकार के बड़े नेताओं के माध्यम से दबाव बनाना शुरू कर दिया है। इसी कड़ी में, जिला प्रधान रघुबीर सिंह के नेतृत्व में कर्मचारियों का एक प्रतिनिधिमंडल राज्यसभा सांसद सुभाष बराला से मिला और उन्हें अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा। प्रतिनिधिमंडल ने सांसद बराला को अवगत कराया कि दमकल कर्मचारी अपनी जान जोखिम में डालकर जनता की सेवा करते हैं, लेकिन सरकार की नीतियों में उनके प्रति भेदभाव स्पष्ट झलकता है। इस अवसर पर फतेहाबाद इकाई प्रधान विनोद खिचड़, राज्य कमेटी सदस्य सतबीर सहारण, सुभाष भूना, ओमप्रकाश भूना, राजेन्द्र नैन जाखल और दिवान माचरा सहित अनेक कर्मचारी मौजूद रहे। सांसद ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि वे उनकी मांगों को लेकर मुख्यमंत्री से बातचीत करेंगे।

फतेहाबाद। सांसद सुभाष बराला को ज्ञापन सौंपते दमकल कर्मचारी।

ज्ञापन में कर्मचारियों ने मुख्य रूप से 16 फरवरी 2026 को फरीदाबाद की एक स्टील कंपनी में हुए अग्निकांड का मुद्दा उठाया। इस दुखद घटना में दो दमकल कर्मी, भवी चंद शर्मा और रणवीर सिंह, कर्तव्य पालन करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। यूनियन का आरोप है कि सरकार इस मामले में दोहरा मापदंड अपना रही है। इसी घटना में शहीद हुए एक पुलिसकर्मी को 1 करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता और सरकारी नौकरी दी गई। इसके विपरीत, शहीद दमकल कर्मियों के परिवारों को केवल 30 लाख रुपये की घोषणा की गई। कर्मचारियों की मांग है कि इन जांबाज दमकल कर्मियों को आधिकारिक तौर पर शहीद का दर्जा दिया जाए और पुलिस की तर्ज पर ही 1 करोड़ रुपये की सहायता व परिवार के एक सदस्य को स्थायी सरकारी नौकरी दी जाए। कर्मचारियों ने विभाग की कार्यप्रणाली और सुविधाओं को लेकर भी कई मांगें रखी हैं। वर्षों से कार्यरत कच्चे दमकल कर्मचारियों को न्यायालय के आदेशानुसार तुरंत पक्का किया जाए और फायर ऑपरेटर के पदों पर समायोजित कर समान वेतन दिया जाए। कर्मचारी संघ ने स्पष्ट कर दिया है कि यदि उनकी जायज मांगों को अनसुना किया गया, तो आंदोलन और भी उग्र होगा। रणनीति के अनुसार, 27 अप्रैल से प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों पर दमकल केंद्रों पर क्रमिक भूख हड़ताल शुरू की जाएगी।

सिरसा : फायर कर्मियों ने विधायक को सौंपा ज्ञापन

सिरसा। फरीदाबाद में हुई दो फायर कर्मियों भवी चंद शर्मा और रणवीर सिंह की मौत के मामले में आर्थिक सहायता, परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दिए जाने की मांग को लेकर संघर्षरत कर्मचारियों ने आंदोलन के 18वें दिन विधायक गोकुल सेतिया को ज्ञापन सौंपा। विधायक ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि वे उनकी मांग को उच्च स्तर पर उठाएंगे। ज्ञापन कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला प्रधान राजेश खिचड़ ने की। प्रधान ने बताया कि 17 दिन बीत जाने के बाद भी सरकार व विभाग की ओर से उनकी मुख्य मांग को लेकर कोई स्पष्ट जवाब नहीं आया है, जिससे उनकी मंशा का साफ पता चल रहा है। अब कर्मचारियों द्वारा जन प्रतिनिधियों से इस मामले में सहयोग की अपील करते हुए ज्ञापन सौंपे जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर जनप्रतिनिधियों से कोई सहयोग नहीं बना तो सांसदों से सहयोग मांगा जाएगा, ताकि मृतक कर्मचारियों के परिवारजनों को राहत पहुंचाई जा सके। संघर्ष की आगामी कड़ी में आगामी 27-28 अप्रेल को क्रमिक भूख हड़ताल और एक और दो मई को दो दिवसीय राज्य स्तरीय हड़ताल की जाएगी। इस मौके पर सुखदेव सिंह, रमेश सैनी, ऋषि सिहाग, सुखराम, अनिल, सजन जांदू, संदीप ज्यानी, सतबीर, राकेश यादव, रामनिवास मुंडाल, बूटर बादशाह, डबवाली से विजय गोदारा, देव कुमार, राकेश गोरीवाला, एसकेएस से गगन दीप सहित अन्य कर्मचारी मौजूद थे।

सिरसा। मांगों को लेकर प्रदर्शन करते हुए फायर कर्मचारी।

एमएम कॉलेज ऑफ एजुकेशन में विशाल कैंपस इंटरव्यू 27 को

फतेहाबाद। एमएम कॉलेज ऑफ एजुकेशन के प्लेसमेंट सेल द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में करियर बनाने के इच्छुक युवाओं के लिए एक बड़े अवसर की घोषणा की गई है। कॉलेज परिसर में आगामी 27 अप्रैल को एक विशाल कैंपस इंटरव्यू का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें फतेहाबाद जिले के कई प्रतिष्ठित और नामी विद्यालय शिक्षक भर्ती हेतु योग्य उम्मीदवारों का चयन करने के लिए शिरकत करेंगे। कॉलेज प्रबंधन द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, इस साक्षात्कार सत्र का मुख्य उद्देश्य वर्तमान सत्र के विद्यार्थियों के साथ-साथ कॉलेज के पूर्व छात्रों को बेहतर रोजगार के अवसर प्रदान करना है। यह उन सभी पुराने विद्यार्थियों के लिए एक उत्कृष्ट मंच है, जो वर्तमान में किसी अच्छे शिक्षण संस्थान में करियर के बेहतर अवसर या अनुभव की तलाश में हैं। इस कैंपस ड्राइव के माध्यम से चयनित उम्मीदवारों को फतेहाबाद के अग्रणी निजी स्कूलों में अपनी सेवाएं देने का मौका मिलेगा। उन्होंने बताया कि साक्षात्कार 27 अप्रैल सोमवार को प्रातः 11 बजे से कॉलेज परिसर में शुरू होगा। प्लेसमेंट सेल ने उम्मीदवारों के लिए विशेष निर्देश जारी करते हुए कहा है कि साक्षात्कार में शामिल होने वाले सभी अभ्यर्थी अपने साथ बायोडाटा और अपने सभी मूल शैक्षणिक दस्तावेजों की प्रतियां अनिवार्य रूप से लेकर आएं।

विद्यार्थियों को दी डेटा साइंस की जानकारी

सिरसा। चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय सिरसा के कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग द्वारा डेटा साइंस विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला शनिवार को संपन्न हो गई। इस कार्यशाला में सिरसा एवं फतेहाबाद के 9 विभिन्न महाविद्यालयों से आए 132 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला के रिसोर्स पर्सन डेटा साइंटिस्ट जगजीत कुमार ने प्रतिभागियों को डेटा साइंस के मूल सिद्धांतों, इसके विविध अनुप्रयोगों तथा आईटी इंडस्ट्री में उपलब्ध करियर संभावनाओं से अवगत कराया। उन्होंने सांख्यिकी एवं एमएस-एक्सेल के उपयोग के साथ-साथ रिग्रेशन, क्लासिफिकेशन, सुपरवाइज्ड लर्निंग, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग, क्लस्टरिंग तथा टाइम-सीरीज एनालिसिस जैसे विषयों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया।

एनडीआरएफ ने चलाया कम्युनिटी अवेयरनेस प्रोग्राम

- जनस्वास्थ्य विभाग के जलघर में बोट चलाने की दी ट्रेनिंग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

राष्ट्रीय आपदा मोचन बल यानि एनडीआरएफ की टीम द्वारा शनिवार को सिरसा में कम्युनिटी अवेयरनेस प्रोग्राम का आयोजन किया गया। एनडीआरएफ बठिंडा की टीम के सदस्यों ने हुडा चौक के निकट पब्लिक हेल्थ के जलघर में इसका प्रशिक्षण दिया गया।

एनडीआरएफ प्राकृतिक आपदा अथवा दुर्घटनाओं की स्थिति में बचाव कार्य करती है। जानकारी के अनुसार एनडीआरएफ में 16 बटालियन है। जिन्हें आपदा के समय बुलाया जाता है। इस टीम द्वारा आपदा के समय जीवन बचाने पर मुख्य फोकस किया जाता है। इसके अलावा राहत पहुंचाना और पुर्ननिर्माण में भी यह सहयोग करती है। अमूमन एनडीआरएफ को भूकंप, बाढ़, चक्रवात जैसी आपदाओं के समय मदद के लिए सबसे पहले पहुंचती है। इसी कड़ी में एनडीआरएफ द्वारा आमजन को प्राकृतिक आपदा के समय बरती जाने वाली सावधानियों बारे विस्तार से बताया गया। टीम द्वारा बताया गया कि किस प्रकार आम आदमी इसमें सहयोग कर सकता है। एनडीआरएफ की टीम द्वारा मोटरबोट के इस्तेमाल बारे जलघर में बोट चलाकर बताया गया।

रिटायर्ड कर्मचारी मांगों को लेकर 12 मई को डीसी कार्यालय पर करेंगे प्रदर्शन

फतेहाबाद।ऑल हरियाणा कर्मचारी वेलफेयर एसोसिएशन ने रिटायर्ड कर्मचारियों की लंबित मांगों को लेकर सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। अपनी विभिन्न मांगों के समर्थन में एसोसिएशन द्वारा आगामी 12 मई को फतेहाबाद में डीसी कार्यालय पर विशाल रोष प्रदर्शन किया जाएगा। इस प्रदर्शन की सफलता को लेकर एसोसिएशन ने जिलेभर में व्यापक जनसम्पर्क अभियान शुरू कर दिया है, ताकि अधिक से अधिक संख्या में सेवानिवृत्त कर्मचारियों को एकजुट किया जा सके। एसोसिएशन के जिला प्रधान मुंशीराम कम्बोज और महासचिव सुभाष चन्द्र चौहान ने प्रदर्शन की तैयारियों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि जिले के कोने-कोने से रिटायर्ड कर्मचारी इस रोष प्रदर्शन में हिस्सा लेने फतेहाबाद पहुंचेंगे। कर्मचारी नेताओं ने स्पष्ट किया कि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा रिटायर्ड कर्मचारियों को 18 महीने का कोरोना काल का बकाया एरियर जल्द देने की जो बात कही जा रही है, वह महज एक अफवाह है। उन्होंने कहा कि सरकार कर्मचारियों को गुमराह करने की कोशिश कर रही है, जबकि धरातल पर अब तक बकाया एरियर को लेकर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है।

भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा ने भूना अनाजमंडी का किया निरीक्षण

भूना। भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा ने आज भूना क्षेत्र के दौरे के दौरान भूना की अनाज मंडी का निरीक्षण किया। यहां उन्होंने मार्केट कमेटी के अधिकारियों के साथ लिफ्टिंग के कार्यों का जायजा लिया तथा अधिकारियों को निर्देश दिए कि लिफ्टिंग के काम में तेजी लाई जाए। मंडी में सभी व्यवस्थाओं को दुरुस्त रखा जाए, ताकि किसान भाईयों व व्यापारियों को कोई परेशानी ना हो। इस दौरान उन्होंने किसानों व मंडी व्यापारियों से भी बातचीत की। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार जो भी नीति या कानून बनाती है, जनता के हितों को ध्यान में रखकर ही बनाती है। मंडियों में फसल खरीद की नई नीति बनाकर भाजपा सरकार ने किसानों व व्यापारियों भाईयों को उनके संभावित नुक्सान से बचाया है। इस अवसर पर उनके साथ भूना के वरिष्ठ नेता ज्ञानचंद परुथी व भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष मोलूराम रुलाहनिया भी मौजूद रहे। प्रवीण जोड़ा वरिष्ठ नेता गुलशन हंस व मार्केट कमेटी के वाईस चेयमैन कैलाश बंसल के प्रतिष्ठान पर भी पहुंचे। यहां जलपान ग्रहण करते हुए विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की तथा भूना के विकास के बारे में भी विचार विमर्श हुआ।

कार्यक्रम 'पशु चिकित्सक : भोजन और स्वास्थ्य के संरक्षक' रहा थीम

विश्व पशु चिकित्सा दिवस पर पशुओं के स्वास्थ्य एवं संरक्षण के प्रति किया लोगों को जागरूक

- पशुओं के स्वास्थ्य एवं आहार की गहन जांच की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

जिले में विश्व पशु चिकित्सा दिवस के अवसर पर पशुओं के स्वास्थ्य एवं संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। यह दिवस प्रत्येक वर्ष अप्रैल माह के अंतिम शनिवार को मनाया जाता है। वर्ष 2026 की थीम 'पशु चिकित्सक : भोजन और स्वास्थ्य के संरक्षक' के अनुरूप जिले में व्यापक स्तर पर गतिविधियां आयोजित की गई।

फतेहाबाद। गोशाला में पशुओं को परजीवी रहित हेतु स्प्रे का निरीक्षण करते हुए पशुपालन विभाग के अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

उपनिदेशक पशुपालन डॉ. सुखविंदर के मार्गदर्शन में विभिन्न पशु अस्पतालों में पशु स्वास्थ्य शिविर, एंटी रेबीज टीकाकरण तथा गोशालाओं में स्वास्थ्य जांच अभियान चलाए गए।

पशुओं को परजीवी मुक्त करने के लिए स्प्रे

इस दौरान पशुपालकों को पशुओं के समुचित रख-रखाव, संतुलित आहार एवं रोगों की रोकथाम के संबंध में जागरूक किया गया। उप मंडल अधिकारी पशुपालन डॉ. सुरेंद्र ने बताया कि पशु चिकित्सकों की भूमिका खेत से लेकर थाली तक महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि दूध एवं अन्य पशु उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में पशु चिकित्सकों का विशेष योगदान रहता है। इसी क्रम में पशु अस्पताल शेखुपुर दड़ौली के अंतर्गत श्री कृष्ण प्रणामी गोशाला में डॉ. रामनिवास बिश्नोई के नेतृत्व में पशुओं के स्वास्थ्य एवं आहार की गहन जांच की गई। साथ ही गोशाला समिति को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए। पशुओं को परजीवी मुक्त करने हेतु स्प्रे का छिड़काव किया गया तथा लंगा बुखार से बचाव के लिए टीकाकरण भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान महिलाओं को पशुओं के स्वच्छ भोजन एवं स्वास्थ्य देखभाल के प्रति शपथ दिलाई गई। डॉ. बिश्नोई ने कहा कि पशु चिकित्सक मानव स्वास्थ्य सुरक्षा की प्रथम कड़ी हैं, क्योंकि मनुष्यों का स्वास्थ्य पशुओं के स्वास्थ्य से सीधे जुड़ा हुआ है।

फतेहाबाद पुलिस लाइन में लगाया निःशुल्क नेत्र जांच शिविर

फतेहाबाद। पुलिस विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिजनों के स्वास्थ्य कल्याण को ध्यान में रखते हुए शनिवार को पुलिस लाइन स्थित सभागार में निशुल्क नेत्र जांच एवं चिकित्सा शिविर लगाया गया। इस शिविर में पुलिसकर्मियों और उनके परिवार के सदस्यों ने भारी उत्साह दिखाया और अपनी आंखों की जांच करवाई। शिविर के दौरान डीएसपी नर सिंह ने विशेष रूप से शिरकत की। उन्होंने डॉ. आंचल जलवा और उनकी मेडिकल टीम को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। डीएसपी ने कहा कि पुलिसकर्मी दिन-रात धूल, मिट्टी और प्रदूषण के बीच फील्ड में ड्यूटी करते हैं, जिससे उनकी आंखों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे में समय-समय पर इस तरह के जांच शिविर उनके लिए संजीवनी का काम करते हैं। प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. आंचल जलवा और उनकी टीम ने अत्याधुनिक मशीनों के माध्यम से जांच की। शिविर में मुख्य रूप से मोतियाबिंद और काला मोतिया की जांच एवं परामर्श, दृष्टि दोष की पहचान और चश्मे के नंबर की सटीक जांच तथा आंखों के संक्रमण (कंजंक्टिवाइटिस) की जांच की गई।

खबर संक्षेप

निकाय चुनाव में भाजपा को मिल रहा समर्थनः सिंह

सिरसा। भाजपा जिलाध्यक्ष एडवोकेट यतींद्र सिंह ने कहा कि विभिन्न नगर निगम एवं नगर निकाय चुनावों में भाजपा को मिल रहा व्यापक जनसमर्थन इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि प्रदेश की जनता पार्टी की नीतियों, विकास कार्यों और सुशासन पर पूर्ण विश्वास जता रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने पिछले वर्षों में पारदर्शिता, जवाबदेही और प्रभावी प्रशासन को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए जो ऐतिहासिक कार्य किए हैं। शहरी क्षेत्रों में मजबूत आधारभूत ढांचा, स्वच्छता, डिजिटल सेवाओं का विस्तार, पेयजल एवं सीवरेज व्यवस्था में सुधार जैसे प्रयासों ने नगर निकायों की तस्वीर को बदल दिया है।

विद्यार्थियों को दी प्राथमिक उपचार की जानकारी

सिरसा। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन द्वारा एनीमिया की रोकथाम और फर्स्ट एड संबंधी जानकारी देने के लिए एक कैंप का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रधानाचार्य मदन मलिक ने की। डॉ. अस्मिता अरोड़ा ने बताया कि एनीमिया जो खून की कमी है, शरीर में विकार लाती है। विभिन्न रोग मनुष्य को घेर लेते हैं, इसके लिए सुबह की सैर, योग, खान-पान पर्याप्त नींद ,आराम, साग सब्जियां और फल के बारे में विस्तार समझाया। डॉ. अंजी खुराना ने बताया कि मनुष्य के चोट लगने के बाद वअंगुली कट जाने पर किस प्रकार का उपचार किया जाए।

बदहाली की कगार पर मिड-डे मील योजना, 3 महीने से न राशन, न बजट

संघ का आरोप : गुमराह कर रही है अधिकारी, कोई पत्र नहीं जारी, विभाग व्यवस्था का बना रहा मजाक

डीईओ बोले, स्कूलो से बजट को लेकर काई डिमांड नहीं, जो आई थी, उसे किया पूरा

शिक्षा विभाग की कथित लापरवाही के चलते दम तोड़ रही मिड डे मिल योजना

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी मिड-डे मील योजना जिला फतेहाबाद में शिक्षा विभाग की कथित लापरवाही के चलते दम तोड़ती नजर आ रही है। जिले के सरकारी स्कूलों में पिछले तीन महीनों से न तो राशन की सप्लाई हुई है और न ही भोजन पकाने के लिए बजट जारी किया गया है। हालात यह है कि शिक्षक अपनी जेब से पैसा खर्च कर बच्चों का पेट भरने को मजबूर हैं। अधिकारी स्कूलों को स्वयं राशन खरीदने की बात कर रहे हैं लेकिन अध्यापकों का कहना है कि उन्हें इस बारे कोई पत्र नहीं मिला है। ऐसे में सबसे ज्यादा परेशानी शिक्षकों के साथ-साथ भीषण गर्मी में स्कूल आने वाले बच्चों को भी उठानी पड़ रही है।

फतेहाबाद। स्कूल में मिड डे मील का भोजन करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

शिक्षक संघ के जिला संरक्षक सुरेन्द्र नैन और जिला प्रधान योगेन्द्र वर्मा ने बताया कि विभाग की कार्यप्रणाली के कारण शिक्षक भारी मानसिक और आर्थिक दबाव में हैं। उन्होंने बताया कि दिसंबर माह से अब तक स्कूलों को कुकिंग कॉस्ट भोजन पकाने की राशि प्राप्त नहीं हुई है। हालात इतने खराब हैं कि शिक्षकों को अपनी जेब से पैसा खर्च कर राशन खरीदना पड़ रहा है ताकि बच्चों को भूखा न रहना पड़े।

शिक्षक अपनी जेब से बच्चों का पेट भरने पर को मजबूर, विभाग की कार्यप्रणाली के कारण आर्थिक व मानसिक रूप से हो रहे परेशान

सिलेंडरों की किल्लत ने समस्या को बढ़ाया

संघ के पदाधिकारियों ने कहा कि विभाग कभी हरहित स्टोर तो कभी हरियाणा एग्रो से राशन लेने के निर्देश देकर केवल गुमराह कर रहा है, जबकि वास्तविकता यह है कि अभी तक किसी भी माध्यम से राशन नहीं पहुंचा है। गैस सिलेंडरों की किल्लत ने समस्या को और बढ़ा दिया है। जब इस बारे में जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी से बात की गई, तो उन्होंने बजट की कमी से इनकार करते हुए स्कूलों को अपने स्तर पर व्यवस्था करने या लकड़ी पर खाना बनाने जैसे सुझाव दिए लेकिन कोई पत्र जारी नहीं किया गया। संघ के जिला महासचिव अनूप गोरा का कहना है कि शिक्षक असमंजस में हैं। अपनी जेब से राशन खरीदकर कब तक बच्चों को भोजन खिलाया जा सकता है, विभाग इस पूरी व्यवस्था का मजाक बना रहा है। राजकीय प्राथमिक शिक्षक संघ के राज्य चेयरमैन देवेंद्र दहिया ने विभाग को अल्टीमेटम देते हुए कहा है कि यदि एक सप्ताह के भीतर राशन की आपूर्ति और बकाया बजट जारी नहीं किया गया, तो स्कूलों में मिड-डे मील बनाना बंद कर दिया जाएगा। इसकी पूरी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

जल्द स्कूलों में पहुंच जाएगा राशन : डीईईओ

जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी अनिता बाई ने इस मामले में अपना पक्ष रखा है। उन्होंने शिक्षकों के दावों के उलट स्थिति को सामान्य बताया और कहा कि मिड डे मील बजट की कोई कमी नहीं है। उनके पास स्कूलों से बजट को लेकर कोई डिमांड नहीं है। जो डिमांड आई थी, उसे पूरा कर दिया गया है। स्कूलों में राशन न पहुंचने पर उन्होंने कहा कि सरकार ने राशन को लेकर कई फर्मों से एमओयू कर रखा है, विभाग द्वारा कई बार राशन को लेकर पत्र लिखा जा चुका है। जल्द ही सभी स्कूलों में राशन पहुंच जाएगा। स्कूलों को कहा गया है कि जब तक राशन नहीं पहुंचता तब तक वह अपने स्तर पर राशन खरीदकर मिड डे मील बनवाएं। गैस सिलैंण्डरों की कमी पर उन्होंने कहा कि अधिकारियों द्वारा गैस एजेंसियों को निर्देश दिए गए हैं कि वह स्कूलों को प्राथमिकता के आधार पर सिलैंडर मुहैया करवाए। इसके अलावा स्कूलों को एमरजेंसी में लकड़ी का प्रबंध करने के भी निर्देश दिए गए हैं।

नए फसल बिक्री कूननों ने बढ़ाई किसानों की परेशानी : डॉ. केवी

डबवाली। गांव चौटाला अनाज मंडी का दौरा करते डॉ. केवी सिंह। फोटो : हरिभूमि

- महिला आरक्षण पर ड्रामेबाजी कर रही भाजपा सरकार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ डबवाली

कांग्रेस नेता डॉ. केवी सिंह ने गांव जांडवाला बिश्नोईयां तथा चौटाला की अनाज मंडी का दौरा कर जायजा लिया। डॉ. केवी सिंह ने कहा कि सरकार महिला आरक्षण की आड़ में जिस प्रकार से परिसीमन को लाना चाहती थी, उसको लोकसभा में विपक्षी एकता ने फेल कर दिया है, लेकिन मौजूदा हरियाणा सरकार इस विषय पर विशेष सेशन बुलाकर ड्रामेबाजी कर रही है। उन्होंने कहा कि महिला आरक्षण मुद्दे पर ड्रामेबाजी की जगह सरकार को किसानों की सुध लेनी चाहिए जो मंडियों में बेहाल है, कहीं पर खरीद नहीं हो रही तो कहीं तुलाई और कहीं भुगतान तक नहीं किया जा रहा। डॉ. केवी सिंह ने कहा कि जब मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर सब कुछ अंकित है तो उसके बाद बायोमेट्रिक तथा वाहन पंजीकरण करने की क्या आवश्यकता है? इसके साथ ही उन्होंने कहा कि किसानों को दस दिन से ज्यादा दिन फसल बेचे हो हो गए हैं लेकिन अभी तक भुक्तान नहीं किया गया।

ये रखी मांगें

डॉ. केवी सिंह ने कहा कि सरकार द्वारा बुलाए गए विशेष सत्र में वो कांग्रेस विधायकों से अनुरोध करते हैं कि वो मंडियों में किसानों को आ रही समस्या जैसे बायोमेट्रिक, वाहन पंजीकरण, जिओ फेंसिंग, उठान, तुलाई और भुगतान जैसी समस्याओं को प्रमुखता से रखें और सरकार को इसके सरलीकरण के लिए बाध्य करें, नहीं तो आगामी धान और नरमें की फसल के समय यह समस्याएं और भी जटिल हो जाएंगी। डॉ. केवी सिंह ने सरकार को आगाह करते हुए कहा कि किसानों को आगामी नरमें और धान की बिजाई के लिए फिर से खाद के लिए लाइनों में न लगना पड़े इसके लिए पहले ही पर्याप्त खाद के विशेष प्रबंध किए जाएं। डॉ. केवी सिंह ने भुक्तान और उठान को लेकर डीएम हैफड तथा एफसीआई के अधिकारियों से संपर्क साध उचित समाधान की मांग भी रखी।

जैन स्कूल के विद्यार्थियों ने शैक्षणिक भ्रमण के दौरान की जमकर मस्ती

- नन्हे-मुन्नों ने तारा बाबा कुटिया का किया दौरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

सेठ सागरमल सुराणा जैन कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की नर्सरी कक्षा के विद्यार्थियों ने शनिवार को तारा बाबा कुटिया में शैक्षणिक भ्रमण किया। कार्यक्रम की शुरूआत बाबा तारा का आशीर्वाद के साथ हुई। इसके पश्चात बच्चों ने कुटिया में स्थित गुफा का भ्रमण किया। पार्क में खिले रंग-बिरंगे फूलों और उड़ती तितलियों को देखकर बच्चे बेहद उत्साहित नजर आए। भ्रमण के दौरान बच्चों ने अपने साथियों के साथ सैंडविच, चॉकलेट, टॉफी और फ्रूटी का आनंद लिया। प्रधानाचार्या रेणु बाला ने बताया कि इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण का उद्देश्य बच्चों को आनंददायक वातावरण में सीखने के अवसर प्रदान करना है। प्राइमरी इंचार्ज नीरज बाला के मार्गदर्शन में बच्चों की सुरक्षा और सुविधा का विशेष ध्यान रखा गया। समिति अध्यक्ष मक्खन लाल गोयल, प्रबंधक हनुमान मल गुजरानी व ट्रस्टी देवेंद्र डागा ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें सामाजिक रूप से सशक्त बनाते हैं।

शैक्षणिक भ्रमण के दौरान मस्ती करते हुए विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

सिरसा। विद्यार्थियों को किताबें वितरित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

जरूरतमंद विद्यार्थियों को वितरित की स्टेशनरी

सिरसा। बाबा सरसाईनाथ सेवा ट्रस्ट द्वारा शहर के वार्ड नंबर 25 में स्थित सरकारी स्कूल में भगवान परशुराम के जन्म पखवाड़े पर जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्टेशनरी वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर बतौर मुख्यातिथि पंजाब नैशनल बैंक के मैनेजर भूपेंद्र त्रिपुरे ने कहा कि जरूरतमंद विद्यार्थियों की मदद करके बाबा सरसाईनाथ सेवा ट्रस्ट के सदस्य बाबा जी की जनकल्याण की भावना को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं, जिसके लिए प्रधान रविंद्र सैनी सहित समस्त ट्रस्ट सदस्यगण बधाई के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि भगवान परशुराम हमें अन्याय के विरुद्ध खड़े होने और सत्य के मार्ग पर अडिग रहने की प्रेरणा देते हैं। यही नहीं भगवान परशुराम अतुलनीय पराक्रम और विवेक के प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि भगवान परशुराम का आशीर्वाद सभी के जीवन को सुख, शांति और समृद्धि से आलोकित करे। ट्रस्ट के प्रधान रविंद्र सैनी ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी जरूरतमंद व गरीब विद्यार्थियों के लिए अनेक योजना चला रहे हैं।

पायनियर स्कूल के दो विद्यार्थियों सुजल व जीविका का इंस्पायर-मानक में चयन

- विज्ञान मॉडल तैयार करने हेतू दिए जाएगे 10 हजार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

पायनियर कॉन्वेंट स्कूल के दो मेधावी विद्यार्थियों का चयन इंस्पायर-मानक योजना के अंतर्गत हुआ है। विद्यालय के कक्षा 10 के छात्र सुजल तथा कक्षा 9 की छात्रा जीविका का चयन वर्ष 2025-26 के लिए किया गया है। चयनित विद्यार्थियों को विज्ञान मॉडल तैयार करने हेतु 10 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी।

फतेहाबाद। सुजल व जीविका।

इसके साथ ही ये विद्यार्थी जिला स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी एवं परियोजना प्रतियोगिता में भाग लेंगे। यह योजना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग तथा राष्ट्रीय नवाचार प्रतिष्ठान, भारत के संयुक्त तत्वावधान में संचालित की जाती है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच एवं नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करना है। प्राचार्य एवं शिक्षकों ने विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह सफलता उनकी मेहनत, लगन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिणाम है। प्रबंध निदेशक विजय निर्मोही, निशांत निर्मोही, प्राचार्या गीतिका मेहता, उप-प्राचार्या तनु भाटिया तथा मैत्री निर्मोही ने विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों एवं स्टाफ को बधाई दी। साथ ही जिला शिक्षा अधिकारी संगीता बिश्नोई एवं जिला विज्ञान समन्वयक मुकेश को भी इस उपलब्धि के लिए बधाई व धन्यवाद प्रेषित किया।

शिविर में 161 लोगों ने किया स्वेच्छा से रक्तदान

सिरसा। शिविर में रक्तदान करते हुए श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

- बाबा गुरबचन के दिखाए मार्गों को व्यवहार में लाना जरूरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

निरंकारी मिशन ने बाबा गुरबचन सिंह की दिव्य स्मृति को मानव एकता दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर निरंकारी सत्संग भवनों पर सत्संग और रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया। इस कड़ी में ब्रांच सिरसा के संत निरंकारी सत्संग भवन में रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ जिसमें सिविल अस्पताल के चिकित्सक एवं रेडक्रॉस की टीम ने रक्तदाताओं की समुचित स्वास्थ्य जांच के उपरांत सुरक्षित, सुव्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से रक्तदान की प्रक्रिया संपन्न कराई, जिसमें 161 यूनिट रक्त संकलित किया गया। इंचार्ज विनोद खन्ना ने बताया कि केवल एक दिन बाबा गुरबचन सिंह को याद कर लेना काफी नहीं है। उन्होंने जो जीवन मानव मात्र को जीकर दिखलाया उन कर्मों को अपने व्यवहार में लाना होगा। इस समागम में जिला सिरसा व फतेहाबाद से हजारों की साधसंगत ने भाग लिया। क्षेत्रीय संचालक सुरेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में सेवादल ने सारी सेवाओं को बखूबी निभाया। मंडल के सचिव जोगिंद्र सुखीजा ने बताया कि समूचे भारतवर्ष के लगभग 200 स्थानों पर रक्तदान शिविरों का सफल आयोजन किया गया, जिससे लगभग 40 हजार यूनिट रक्त संकलित किया गया।

क्रेसंट स्कूल में विश्व मलेरिया दिवस पर प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों को किया जागरूक

- व्याख्यान व नारों से विद्यालय में दिया स्वच्छता व जागरूकता का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

क्रेसंट स्कूल में स्वस्थ जीवन की ओर एक कदम थीम के साथ विश्व मलेरिया दिवस के उपलक्ष्य में ज्ञानवर्धक विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को मलेरिया जैसी गंभीर बीमारी के प्रति जागरूक करना एवं स्वच्छता के महत्व को समझाना था। ख्याति, जीविका व अवनीत के मंच संचालन में सुखमनदीप दीप ने अपने सुविचार के माध्यम से बताया कि मलेरिया से बचाव के लिए सावधानी एवं जागरूकता सबसे बड़ा उपाय है। युवराज सिंह व कृतिका ने अपने प्रभावशाली व्याख्यान के माध्यम से मलेरिया के कारण, लक्षण एवं बचाव के उपायों का वर्णन किया। वैभव, सहज व मंयक ने अपने जोशीले नारों के द्वारा स्वच्छता एवं जागरूकता का संदेश पूरे विद्यालय में प्रसारित किया। ऋषभ व अनुदीप द्वारा आयोजित विश्व मलेरिया दिवस से संबंधित सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी ने विद्यार्थियों की जानकारी में वृद्धि की। छात्र अक्षर ने मलेरिया दिवस से संबंधित स्पेल चेक गतिविधि से कार्यक्रम को रोचक बनाया।

फतेहाबाद। क्रेसंट स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

ग्रामीणों को मिलेगी गर्मी से राहत, पूरी रात बिजली का फैसला सराहनीयः खिलेरी

- 23 अप्रैल की आधी रात से पूरे प्रदेश में प्रभावी हुआ नया नियम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

वरिष्ठ भाजपा नेता सुभाष खिलेरी ने हरियाणा सरकार और बिजली वितरण निगम द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति के नए शेड्यूल का स्वागत किया है। उन्होंने इसे प्रदेश के किसानों और ग्रामीणों के हित में एक ऐतिहासिक और राहतकारी कदम बताते हुए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और बिजली मंत्री अनिल विज का आभार व्यक्त किया है। सुभाष खिलेरी ने कहा कि बढ़ती गर्मी और उमस के बीच ग्रामीणों के लिए यह खबर किसी बड़ी सौगात से कम नहीं है। सरकार ने निर्णय लिया है कि अब गांवों में 'पूरी रात' निर्बाध बिजली की सप्लाई दी जाएगी, ताकि लोग चैन की नींद सो सकें। उन्होंने बताया कि यह नया शेड्यूल 23 अप्रैल की आधी रात से पूरे प्रदेश में प्रभावी हो गया है। उन्होंने बताया कि शाम होते ही बिजली की आपूर्ति शुरू हो जाएगी जो बिना रुके अगली सुबह तक जारी रहेगी। हिसार जोन जिसमें फतेहाबाद क्षेत्र भी शामिल है, में शाम 7 बजे से सुबह 6:30 बजे तक लगातार साढे 11 घंटे बिजली मिलेगी। गर्मी के पीक समय यानी दोपहर 12 बजे से शाम 4:30 बजे तक भी बिजली उपलब्ध रहेगी, ताकि लोगों को लू और तपिश से बचाया जा सके। उन्होंने कहा कि रात को कट नहीं लगने से बच्चों की पढ़ाई और बुजुर्गों की सेहत पर बुरा असर नहीं पड़ेगा।

सुभाष खिलेरी।

नशा तस्करों के खिलाफ भवानी सिंह ने कसी कमर

देश के भीतर दुश्मनों से लड़ेगी नशामुक्ति सेना: सिंह

अशोक अलीका, शर्मचिंद लाली, गुरचरण खोखर रतिया, जोगिन्द्र सिंह बने जिला उपाध्यक्ष

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

जिले में नशे के खिलाफ जारी जंग अब एक निर्णायक मोड़ पर पहुंच गई है। पिछले सवा साल से युवाओं को नशे की गर्त से निकालने और तस्करों को सलाखों के पीछे पहुंचाने में जुटे महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रधान भवानी सिंह ने अब 'नशामुक्ति सेना' के गठन की घोषणा कर दी है। फतेहाबाद से शुरू हुई यह मुहिम जल्द ही पूरे हरियाणा और फिर देश भर में विस्तार करेगी। पत्रकारों से बातचीत के दौरान भवानी सिंह ने एक कड़ा संदेश दिया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सेना के जवान सीमाओं पर बाहरी दुश्मनों से रक्षा करते हैं, उसी प्रकार नशामुक्ति सेना देश के भीतर छिपे उन दुश्मनों से लड़ेगी जो जहर बेचकर युवाओं को मौत के मुंह में धकेल रहे हैं।

फतेहाबाद। नशामुक्ति सेना की जिला कार्यकारिणी घोषित करते भवानी सिंह।

राज राजेश्वरी प्रभारी एवं मोहन गढ़वाले बने जिलाध्यक्ष

इस अवसर पर फतेहाबाद जिला कार्यकारिणी की भी विधिवत घोषणा की गई, जिसमें स्थानीय युवाओं और समाजसेवियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं ताकि जमीनी स्तर पर इस अभियान को गति दी जा सके। इसमें राज राजेश्वरी देवी को जहां जिला प्रभारी बनाया गया है वहीं मोहन गढ़वाल सरपंच अकांवाली को जिलाध्यक्ष की जिम्मेवारी सौंपी गई है। इसके अलावा अशोक अलीका, शर्माचंद लाली, गुरचरण खोखर रतिया, जोगिन्द्र सिंह सरपंच कुकड़ांवाली, रवि भाकर, मास्टर चन्द्रभान वधवा को जिला उपाध्यक्ष, महेन्द्र मास्ट व नैब सिंह मंडेर रतिया को जिला महामंत्री, कर्ण सिंह सरपंच हिजरावां कलां, सोनी सरपंच खुनन, राम सिंह पूनियां अयाल्की, धर्मपाल चावला फतेहाबाद, कृष्ण पारचा फतेहाबाद को जिला सचिव, विकास कम्बोज सरपंच बरसीन, संजय वर्मा सरपंच दौलतपुर, सुखराज सिंह सरपंच बीराबदी, कुलदीप हिजरावां खुर्द को जिला सहसचिव, हरीश बंसल को कोषाध्यक्ष, रवि को मीडिया प्रभारी, नरेश बनगांव को लीगल एडवाइजर व राजेश राईका को सोशल मीडिया प्रभारी बनाया गया है। इसके अलावा संगीता प्रणामी जांगड़ा को जिला महिला प्रधान घोषित किया गया है।

बास्केटबॉल स्पर्धा में 300 खिलाडियों ने लिया भाग

सिरसा। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एवं खेलो भारत, डबवाली द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय डबवाली में स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम अभियान के अंतर्गत बास्केटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार सुनील कुमार थे। इस अवसर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रांत सहमंत्री सुनील शास्त्री एवं खेलो भारत के प्रांत संयोजक देवांशु शर्मा भी विशेष रूप से मौजूद थे। प्रतियोगिता में लगभग 300 प्रतिभागियों ने भाग लिया। वक्ताओं ने कहा कि आज के दौर में बढ़ता स्क्रीन टाइम युवाओं के स्वास्थ्य और भविष्य के लिए चुनौती बनता जा रहा है। ऐसे में स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम जैसे अभियान युवाओं को खेलों की ओर प्रेरित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में साहिल स्वामी, सूर्यप्रकाश, मोहित बिश्नोई, खुशप्रीत, रचना, कल्पना, ऋतु, मुकेश, शिक्षा, सक्षम, जगमीत, विजय, रमेश, जितेंद्र, विशाल, प्रवीण, मनीष, साहिल, पायल, राहुल भांभू, आदि रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 9315429403, 8291554800, 7988727916

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 26 अप्रैल 2026

विशेषः अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस 29 अप्रैल

{आवरण कथा / प्रस्तुतिः रेणु खंतवाल}

नृत्य ऐसी कला है, जो जीवन को उमंगित कर देती है। जिनके जीवन में नृत्य शामिल होता है, वे हर पल संतुलित, आनंदित महसूस करते हैं। नृत्य दिवस के अवसर पर यहां अलग-अलग शैली के नर्तक और नृत्यांगनाएं बता रहे हैं नृत्य का उनके जीवन में क्या महत्व है? यानी, नृत्य ने उनके जीवन को किस-किस स्तर पर बदला, उसे अलग दिशा प्रदान की? जब नृत्य के दौरान वे उसमें पूरी तरह खो जाते हैं तो उस समय किस तरह की अनुभूति होती है? और शारीरिक-मानसिक सेहत बेहतर करने में नृत्य की भूमिका को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं?

जीवन की सरगम पर तन-मन की थिरकन

नृत्य से जीवन में निखार आता है

कविता द्विवेदी, ओडिसी नृत्यांगना

नृत्य मेरे लिए जीवन है और मेरे जीवन में नृत्य है। मैं ऐसा महसूस करती हूं कि अगर मेरे जीवन में नृत्य नहीं होता तो मेरे जीवन का कोई अस्तित्व भी नहीं होता। नृत्य ने समय-समय पर मेरे जीवन को बदला, स्थापित किया। मुझे अलग-अलग स्तर पर पहचान दी, आगे बढ़ाया। इसी की वजह से मुझे कॉलेज में स्कॉलरशिप मिली और देश दुनिया में अपनी कला दिखाने का अवसर मिला। मैं दृढ़ विश्वास से आगे बढ़ पाई। सन 2013 में मुझे ओडिसा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला। इस पुरस्कार का भी मेरे जीवन में बहुत महत्व रहा है। नृत्य के माध्यम से मैंने खुद को खोजा, समझा कि मुझमें क्या अच्छाई है, क्या कमी? जब भी मैं नृत्य करती हूं, उसमें खो जाती हूं। उसके बाद मैं नृत्य के शिखर बिंदु पर पहुंच जाती हूं। वहां तो मुझे अपनी कोई सुधबुध नहीं रहती। पूर्ण समर्पण के साथ मैं नृत्य में डूबी होती हूं। उस दौरान एक दिव्य शक्ति को महसूस करती हूं। जब मैं अपनी प्रस्तुति पूरी करती हूं, उसके बाद मुझसे कुछ बोला ही नहीं जाता, मैं चुप हो जाती हूं। कभी महसूस करती हूं कि अब मुझे एकांत चाहिए। जिस शक्ति के साथ मैं नृत्य कर रही थी, उसी शक्ति के साथ मैं कुछ वक्त बिताऊं। नृत्य से मुझे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा मिलती है। हर व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में नृत्य को शामिल करना चाहिए। नृत्य से जीवन में निखार आता है। नृत्य के माध्यम से आप समाज में अलग पहचान, महत्व बनाते हैं। बहुत त्याग और तपस्या से मैंने नृत्य के माध्यम से देश-दुनिया में एक अलग पहचान बनाई है। *

तन-मन-जीवन के लिए जरूरी है नृत्य

श्रुति सिन्हा, कथक नृत्यांगना

नृत्य मेरे जीवन का महत्वपूर्ण, बहुआयामी हिस्सा है। नृत्य ने मुझे जीने का सकारात्मक नजरिया दिया। मेरा शरीर, मन और आत्मा पूरे तरीके से नृत्य में डूबे रहते हैं। मैं नृत्य के जरिए खुद को बहुत मजबूत महसूस करती हूं। जीवन में जितने भी उतार-चढ़ाव आते हैं, उससे उबरने में नृत्य मेरी बहुत सहायता करता है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और पेशेवर स्तर पर नृत्य का मुझ पर बहुत प्रभाव रहा। आज नृत्य के कारण ही सामाजिक स्तर पर मुझे इतना मान-सम्मान मिलता है। नृत्यांगना, नृत्य शिक्षिका और कोरियोग्राफर के रूप में मेरी पहचान है। नृत्य ने ही मुझे सकारात्मक, ऊर्जावान बनाया। आत्म खोज व अनुशासन के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ना सिखाया। रचनात्मक नई सोच और कल्पनाशक्ति प्रदान की। इस तरह नृत्य ने मुझे जीवन में बहुत कुछ दिया है। कई बार नृत्य करते हुए मैं जब उसमें पूरी तरह खो जाती हूं, उस समय जो अनुभूति होती है उसे शब्दों में बताना मुश्किल है। उस अनुभूति को सिर्फ महसूस किया जा सकता है। उस समय मैं सिर्फ अपने आप में लीन होकर नृत्य में डूबी होती हूं। शायद इसे ही नृत्य के जरिए मनुष्यतत्व का देवतत्व तक पहुंचना कहते हैं। नृत्य बहुत अच्छा व्यायाम भी है, जिससे शरीर लचीला, मजबूत और ऊर्जावान बनता है। नृत्य आत्मविश्वास बढ़ाता है, तनाव, चिंता व अवसाद कम करता है। नृत्य, संगीत और ताल के साथ जुड़कर मन को खुशी व शांति देता है। मन को संतुलित करने के साथ-साथ पूरे व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है। इस तरह नृत्य शारीरिक और मानसिक सेहत दोनों के लिए बहुत लाभकारी होता है। मेरा मानना है कि नृत्य को अपने डेली रूटीन में शामिल करने से सकारात्मक सोच बढ़ती है। आलस नहीं रहता। शरीर बीमारियों से दूर रहता है। अतः हम किसी भी उम्र के हों, नृत्य जरूर करना चाहिए। *

नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है

बीके अतुल गोस्वामी, कंटेंपरेरी डांसर-कोरियोग्राफर

मेरे लिए नृत्य केवल एक कला नहीं बल्कि मेरी पहचान है। नृत्य ने मेरे शरीर को शक्ति, मन को शांति और मेरी आत्मा को मुझसे जोड़ा है। जहां शब्द रुक जाते हैं, वहां से मेरा नृत्य शुरू होता है यानी नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है। जब मैं नृत्य करता हूं और पीक पर पहुंच जाता हूं, उस समय मुझे यह महसूस होता है कि मैं डांस नहीं कर रहा हूं बल्कि मेरी आत्मा मेरे शरीर से डांस करवा रही है। उसके बाद हर बीट दिल की धड़कन बन जाती है और दुनिया कुछ पलों के लिए ठहर सी जाती है। डांस करते हुए मैं इस पीक को हमेशा महसूस करता हूं क्योंकि उन पलों में मैं खो जाता हूं। नृत्य केवल शरीर की ही नहीं बल्कि मन की थेरेपी भी होती है। नृत्य वो ताकत है, जो तनाव को भी ऊर्जा में बदल देता है। जैसे ही आप डांस करना शुरू करते हैं, शरीर में जितनी भी नकारात्मकता है, वह अपने आप रिलीज होने लगती है और आप बहुत हल्का महसूस करते हैं। अगर आप रूटीन में अपनी पसंद का कोई भी डांस शामिल करें तो यह आपको फ्रीडम का एहसास कराएगा। डांस के हर बीट पर आप अपने तनाव को कम करते जाते हैं। यह आपको शारीरिक रूप से तो फिट रखता ही है, साथ ही सोच व विचारों को सकारात्मक भी बनाता है। जब भी मैं तनाव महसूस करता हूं तो डांस करके खुद को हल्का और खुश महसूस करता हूं। इसलिए मैं तो यही सबसे कहता हूं कि हर इंसान को डांस जरूर करना चाहिए। *

नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के करीब ले जाता है

ऐश्वर्य हरीश, भरतनाट्यम नृत्यांगना

मेरे लिए नृत्य केवल जीवन का हिस्सा नहीं है बल्कि मेरा जीवन ही है। मैं अपने परिवार की पांचवीं पीढ़ी से हूं, जो नृत्य कला से जुड़ी है। नृत्य मेरे खून में रचा-बसा है। बचपन से मैं देखती आ रही हूं कि यह मेरे साथ इस तरह जुड़ गया कि कभी लगा ही नहीं कि मैं कुछ अलग काम कर रही हूं। नृत्य ने मुझे अनुशासन और धैर्य सिखाया। खुद को समझना सिखाया। जैसे-जैसे मैं नृत्य करती गई यह मेरे लिए केवल नृत्य नहीं रहा बल्कि साधना बन गया। नृत्य हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है। नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के और करीब ले जाता है। कई बार लगता है कि जो मैं शब्दों में नहीं कह पाती, वह नृत्य अपने आप कह देता है। नृत्य में जो पीक स्टेज होती है, उसे शब्दों में कह पाना मुश्किल है। क्योंकि उस समय आप नृत्य कर नहीं रहे होते बल्कि नृत्य बन जाते हो। एक अलग ही स्थिति होती है, जहां अहंकार धीरे-धीरे मिट जाता है। उस समय न तो समय का, न दर्शकों का और न ही मंच का बोध रहता है। बस लय भाव और एक प्रवाह रह जाता है। कभी लगता है कि बाहर और भीतर का भेद ही मिट गया है और जो कुछ भी हो रहा है, वह अपने आप हो रहा है और आप उसका आनंद ले रहे होते हैं। अगर आप कृष्ण और यशोदा का संवाद दिखा रहे हैं तो आप ही कृष्ण, आप ही यशोदा हो जाते हैं। यह बहुत गहरा आनंद होता है। यह वह पल होता है, जहां कला साधना और अध्यात्म, तीनों एक हो जाते हैं। नृत्य शरीर का संतुलन अभ्यास भी है। इससे स्ट्रेंथ और स्टेमिना बढ़ता है। नृत्य की मुद्राएं शरीर में एक संतुलन उत्पन्न करती हैं और धीरे-धीरे यही संतुलन आपके जीवन जीने के तरीके और व्यवहार में भी आता है। जब आप नियमित रूप से नृत्य करते हैं तो एकाग्रता अपने आप बढ़ने लगती है। मन स्थिर हो जाता है। जीवन में तनाव भी कम होने लगता है। मेरा मानना है कि कला इंसान को सकारात्मक बनाती है। जब आप संगीत के साथ थोड़ी देर लय ताल में थिरकते हैं तो आपकी ऊर्जा अपने आप बदलने लगती है। *

मोबाइल स्क्रीन पर सिमटता सिनेमा
माइक्रो-सीरीज का चढ़ता सूरज!

{न्यू ट्रेंड / गौरव द्विवेदी}

फिल्म, टीवी सीरियल, वेब-सीरीज और शॉर्ट फिल्म्स के बाद अब माइक्रो-सीरीज का ट्रेंड तेजी से पॉपुलर हो रहा है। इसके पॉपुलर होने की क्या वजहें हैं। यह किस तरह से एंटरटेनमेंट स्टाइल को पूरी तरह बदल रहा है, इस पर एक नजर।

भारत में मनोरंजन की दुनिया एक दिलचस्प मोड़ पर है। सिनेमा अब बड़े पर्दे से निकलकर मोबाइल स्क्रीन में सिमट रहा है। इस बदलाव का सबसे बड़ा चेहरा है माइक्रो-सीरीज और वर्टिकल वीडियो। यह केवल एक ट्रेंड नहीं, बल्कि एक वैश्विक बदलाव है। अनुमान है कि 2025 तक दुनिया के कुल इंटरनेट ट्रैफिक का लगभग 82% वीडियो कंटेंट का रहा, जिसमें शॉर्ट, वर्टिकल वीडियो का दबदबा सबसे ज्यादा था।

बढ़ रहा शॉर्ट वीडियो मार्केटः इंस्टाग्राम और यू-ट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स ने देखने की आदत को पूरी तरह बदल दिया है। अब दर्शक 'देखता' नहीं, बल्कि 'स्क्रॉल' करता है, और हर स्क्रॉल में कहानी फिट होनी चाहिए। भारत में इस बदलाव की गति और भी तेज है। एक रिपोर्ट के अनुसार, देश में 100 मिलियन (10 करोड़) से अधिक दर्शक पहले ही माइक्रो-ड्रामा कंटेंट देख रहे हैं। यानी यह अब मनोरंजन की मुख्यधारा बन चुका है। वैश्विक स्तर पर शॉर्ट वीडियो मार्केट का आकार 2026 में लगभग 59 अरब डॉलर आंका जा रहा है, जो 2033 तक बढ़कर 118 अरब डॉलर से ज्यादा का हो सकता है। सिर्फ वर्टिकल वीडियो सेगमेंट ही 2025 में लगभग 67% हिस्सेदारी तक पहुंच चुका है, जो इस फॉर्मेट की ताकत को दर्शाता है।

घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिकाः भारत में इस उभार के पीछे घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिका है। 'कुकु टीवी' जैसे प्लेटफॉर्म ने वर्टिकल माइक्रो-ड्रामा को एक नई पहचान दी है। इसके 1.2 करोड़ (12.7 मिलियन) से अधिक डाउनलोड्स हो चुके हैं, जबकि इसके ऑडियो प्लेटफॉर्म 'कुकु एफएम' ने 1 करोड़ से अधिक पेड सब्सक्राइबर्स का आंकड़ा पार कर लिया है। इसी तरह 'मोज' और 'जोश' जैसे भारतीय शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म्स ने मिलकर 300 मिलियन (30 करोड़) से अधिक यूजर इकोसिस्टम तैयार कर लिया है। नई श्रेणी के प्लेटफॉर्म जैसे 'क्विक टीवी', 'टुकटुकी', 'कटिंग' भी 2–5 मिनट के एपिसोड्स के साथ तेजी से उभर रहे हैं, और कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार हाल के महीनों में ही 150 मिलियन व्यूअर्स ने माइक्रो-सीरीज कंटेंट देखा, जबकि रोजाना एपिसोड व्यूज 100 मिलियन तक पहुंच गए।

अन्य देशों में भी बढ़ रही पॉपुलैरिटीः चीन इस बदलाव का सबसे बड़ा उदाहरण है, जहां 'डुआंजू' (माइक्रो ड्रामा) इंडस्ट्री तेजी से एक समानांतर फिल्म उद्योग बन चुकी है। वहीं अमेरिका में भी 'ड्रामा बॉक्स' जैसे प्लेटफॉर्म्स करोड़ों यूजर्स के साथ पारंपरिक ओटीटी को चुनौती दे रहे हैं। इतना ही नहीं, यू-ट्यूब शॉर्ट्स पर रोजाना दो सौ अरब व्यूज तक का आंकड़ा सामने आता है, जो इस बदलाव की गति को दर्शाता है।

तेजी से बढ़ रहा ट्रेंडः भारत में यह ट्रेंड और तेजी से बढ़ रहा है। सस्ते डेटा, 5जी और स्मार्टफोन के प्रसार ने इसे जन-आंदोलन बना दिया है। टियर-2 और टियर-3 शहरों में युवा दर्शक अब माइक्रो-सीरीज को न केवल देख रहे हैं, बल्कि बना भी रहे हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह मॉडल बेहद आकर्षक है। जहां एक

पारंपरिक टीवी शो के एक एपिसोड पर करोड़ों रुपए खर्च होते हैं, वहीं एक वर्टिकल सीरीज का पूरा सीजन कुछ लाख में बन सकता है। हालांकि, इस तेजी के साथ कुछ खतरे भी हैं। जैसे-कहानियों की गहराई कम हो रही है और एल्गोरिदम यह तय कर रहा है कि क्या चलेगा? फिर भी, यह मानना होगा कि यह बदलाव अस्थायी नहीं है। यह भारतीय मनोरंजन उद्योग के नए ढांचे की नींव है। आने वाले समय में बड़ी फिल्में और वेब-सीरीज पहले माइक्रो-फॉर्मेट में अपनी लोकप्रियता साबित करेंगी। अब सिनेमा देखा नहीं जाता, स्क्रॉल किया जाता है। और जो स्क्रॉल में फिट हो जाए, वही नया सिनेमा है। *

(लेखक फिल्म पॉलिसी के जानकार हैं)

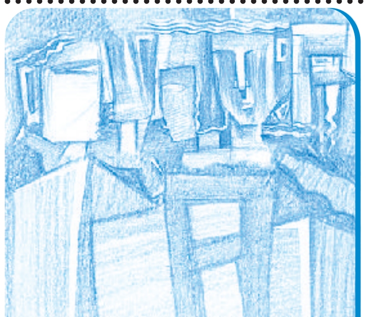

{गीत / कृष्ण बिहारी}

सबकी अपनी सीमाएं हैं

कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं,
हर कोई रीता-रीता है
कहने को सभी अघाए हैं।
अतृप्त जिंदगी छूंछी-सी
ऊपर से दिखती सजी-धजी
गर पास बुलाकर बैठा लो
तो लगती कितनी बुझी-बुझी
भ्रम के साए में सभी यहां
मुरदा पहचान बनाए हैं।
पेट काट जो तन ढंकती थी
वही भरे पेट अब नंगी है
नाच-नाचकर कहे सभ्यता
दुनिया यह रंग-बिरंगी है
रंग-रोगन से पुते हुए सब
भीतर-भीतर मुरझाए हैं।
जब देह में मन अनुपस्थित हो
औ' रूप जिए केवल पीड़ा
मेले में भी तनहाई हो
औ' प्राण हीन हो हर क्रीड़ा
तो बात समझनी क्या मुश्किल
अपनों से भेद छिपाए हैं।
कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं।

{व्यंग्य / सूर्य कुमार पांडेय}

शातिर अंतरात्मा गब्बर की

गब्बर की अंतरात्मा ने झकझोरते हुए कहा, 'तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

जब वही धंधा शहर में रह कर भी किया जा सकता है, तो बीहड़ में छिपकर क्यों रहा जाए?' एक रोज गब्बर की शातिर अंतरात्मा से आवाज आई, 'रे मूर्ख, परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। तू देखता ही होगा कि राजनेता आए दिन अपनी दलीय निष्ठाएं बदलते रहते हैं। बयानवीर अपने बयान बदल लेते हैं। सरकार में मंत्रियों के विभाग बदल जाते हैं। अधिकारियों और कर्मचारियों के तबादले होते रहते हैं। जिनका स्थानांतरण किया जाता है, वे जब दूसरी जगहों पर तैनाती पाते हैं तो क्या उनके गुण-धर्म बदल जाते हैं? भ्रष्टाचारी को कहीं भी भेज दो, वह भ्रष्टाचारी ही रहेगा। उसे सदाचारियों की भीड़ के बीच बैठा दो, तब भी वह स्वयं तो सुधरेगा नहीं, वहां के लोगों को अपने जैसा जरूर बना लेगा। यह काम तो तू भी कर सकता है। तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

जब गब्बर की अंतरात्मा से यह आवाज बार-बार उठने लग गई, तब उसने एक शाम अपने गैंग के सदस्यों का एक पैनल बनाया और स्वयं एंकर की भूमिका में रहते हुए एक धुआंधार बहस की। एक बहसबाज दस्यु ने कहा, 'डकैती डालना घृणित कार्य है। अब हमें वैकल्पिक रोजगार की तलाश करनी चाहिए।' यह सुनकर दूसरे दुर्दांत बहसबाज ने घोर आपत्ति की, 'तुम बकवास कर रहे हो। डकैती तो हमारा पवित्र धर्म है। कोई हमारे धर्म को लेकर ऐसी बात कहेगा, तो मैं उसका सिर कलम कर दूंगा।' तीसरे बहसबाज डकैत ने कहा, 'अब डकैती के धंधे में पहले जैसी बरकत नहीं रही। मैं कल सरदार के आदेश पर एक गांव में गया था। वहां पर पहले हमारे जाते ही लोग अपने घरों से अनाज की बोरियां लाकर हमारे चरणों में धर दिया करते थे। इस बार मुझे पता चला कि सभी लोग खुद खाली थैले लेकर पांच किलो अनाज पाने के लिए सरकारी गल्ले की दुकानों पर गए हुए थे।' चौथे बहसबाज डाकू ने कहा, 'सरदार, अब आप ही बताइए, आपका निर्णय ही हमें दिशा दिखला सकता है।'

गब्बर ने बहस का समापन करते हुए कहा, 'मैंने तुम सबकी बातें ध्यानपूर्वक सुनी हैं और इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि हमें अपना यह डकैती वाला धंधा छोड़ देना चाहिए और दूसरे वैकल्पिक रास्ते तलाशने चाहिए। हम इस घटाटोप जंगल में अड्डे बदलते-बदलते आजिज आ चुके हैं। ऊपर से हमेशा पुलिस का डर बना रहता है। साथ में मुखबिरी के खतरे तो हैं ही। क्या पता, अपने ही गैंग का कौन बंदा कब दगा दे जाए और हम सब एक दिन किसी एनकाउंटर में मार दिए जाएं! क्यों कालिया?' तब कालिया कहने लगा, 'सरदार, मैंने आपका नमक खाया है। घोर महंगाई में आपने हमें नीबू भी खिलाए हैं। आपकी कृपा बनी रहेगी तो हम आपके फार्म हाउस में बैठकर कल पिज्जा-बर्गर भी खाएंगे। वैसे भी यह कोई हमारा पुश्तैनी धंधा तो है नहीं कि इसे छोड़ देने में डकैतों की बिरादरी में हमारी नाक कट जाएगी। हम बीहड़ की जगह शहर में रहकर भी वहां के सम्मानित डकैतों जैसी शानदार जिंदगी जी सकते हैं।' उन सभी की बातें सुनकर गब्बर ने खैनी मलते हुए पूछा, 'अरे ओ सांभा, तू क्यों चुप है? तू भी तो बता कि हमें क्या करना चाहिए?' सांभा बोला, 'सरदार, आपने जो फैसला लिया है, वही सही है।'

इसके बाद उस इलाके में अपने बर्बर आतंक के चलते कुख्यात हो चुका गब्बर अब एक शरीफ डकैत बन चुका है। यूं भी कुख्यात और विख्यात होने में कोई खास अंतर नहीं होता है। मात्र जंगल और नगर का फर्क होता है। तो गब्बर और उसका गैंग अब सम्मानित डकैत बन चुके हैं। अब उस पर सरकारें इनाम नहीं घोषित करतीं हैं। अब वह खुद सरकारों को मदद-इमदाद करता है। अब पुलिस भी उसे ठोकने की फिराक में नहीं रहती, अलबत्ता वह उसे ही सलाम ठोंकती है। लेकिन कल गब्बर के साथ एक बुरी बात हो गई। उसके घर पर सीबीआई और ईडी का छापा पड़ गया। उसकी हवेली पर बुलडोजर चल गया। गब्बर अपने पूरे गैंग के साथ जेल में है और अपनी शातिर अंतरात्मा को तलाश रहा है। वह मिल जाए तो उसे गोली मार देगा। लेकिन गब्बर यह बात नहीं जानता है कि उसकी अंतरात्मा तो डकैती के धंधे में आते ही मर चुकी थी। यह उसका आंतरिक भय था, जिसको वह गलती से अपनी शातिर अंतरात्मा समझ बैठा था। *

{पुस्तक चर्चा / कुलदीप सिंह भाटी}

ग्लैमर की दुनिया का किस्सा

कथा साहित्य में किस्सागोई का एक विशिष्ट स्थान रहा है। कारण इसका यह है कि किस्सागोई में बात से बात निकलती चली जाती है। इस तरह इसमें रोचकता के साथ ही साथ जिज्ञासा भी बनी रहती है। वरिष्ठ कथाकार और शायर हबीब कैफी का नया उपन्यास 'काला, धौला और रंगीन' इसी किस्सागोई शैली में लिखा गया एक उम्दा उपन्यास है। इस कथा की मुख्य पात्र पलक है। फिल्मी दुनिया की यह सफल अभिनेत्री, जब एक साहित्यकार के आगे खुलने लगती है तो प्रायः बंद ही रहने वाली यह स्त्री जिंदगी की कई परतें खोलती चली जाती है। पता चलता है कि एक नामी राजघराने से ताल्लुक रखने वाली यह अभिनेत्री अपने क्षेत्र, फिल्मी दुनिया के साथ ही साहित्य, कला और संगीत आदि से भी बड़ी हद तक लगाव और जुड़ाव रखती है। संवेदनशील अभिनेत्री पलक इस बीच सहज ही अपनी जिंदगी की परतें भी खोलती चली जाती है तो पता चलता है कि एक्स्ट्रा जूनियर आर्टिस्ट से नामी अभिनेता बने, समीर से यह गहरे प्रेम में है। मानवीय गुणों से संपन्न नैसर्गिक अभिनेता समीर मस्त मौला स्वभाव के कारण पलक के प्रेम का ठीक-ठीक जवाब नहीं दे पाता। समय अपनी गति से गुजरता जाता है और एक दिन अचानक ही समीर दुनिया छोड़ जाता है। उपन्यास के अंत में पाठक पलक की सच्ची और गहरी मोहब्बत महसूस करते हैं तो उनका दिल भी भर आता है।

लगभग अपठनीयता के इस दौर में यह उपन्यास न केवल स्वयं को पढ़वा ले जाता है, अपितु एक गहरी कसक भी पाठक के मन में छोड़ जाता है। उपन्यास के भाषा की रवानगी भी इसकी पठनीयता को बनाए रखने में बड़ी भूमिका निभाती है। *

पुस्तकः काला, धौला और रंगीन (उपन्यास), **लेखकः** हबीब कैफी, **मूल्यः** 299 रुपए, **प्रकाशकः** कौटिल्य बुक्स, दिल्ली

{लघुकथा / शीला श्रीवास्तव}

एहसास

सड़क पर दूर से ही पुलिस वालों की चेकिंग होती देख कमलेश ने अपनी मोटरसाइकिल वापस घुमा ली। 'क्या हुआ, गाड़ी क्यों वापस घुमा रहे हो?' पीछे बैठे दोस्त ने पूछा। 'आगे चेकिंग चल रही है। इन पुलिस वालों को कोई काम धंधा है नहीं। जब देखो चौराहे पर खड़े होकर चेकिंग करना शुरू कर देते हैं। हेलमेट क्यों नहीं पहना? लाइसेंस कहां है? बिना नंबर की गाड़ी कैसे चला रहे हो? ढेरों सवाल पूछने लगते हैं। उनको तो बस लोगों को तंग करना होता है और कुछ नहीं।' कमलेश झुंझलाते हुए बोला। 'ऐसा क्यों बोल रहे हो? वो तो बेचारे अपनी ड्यूटी करते हैं।' दोस्त ने कमलेश को समझाने की कोशिश की। 'अरे, काहे की ड्यूटी! इनको तो बस अपनी जेब भरनी होती है और कुछ नहीं।' कमलेश खीझ भरे स्वर में बोला।

इस घटना के कुछ दिनों बाद कमलेश के बेटे का एक्सीडेंट हो गया। बिना नंबर वाली गाड़ी चला रहे किसी टेंपो ड्राइवर ने पीछे से उनके बेटे की बाइक पर जोरदार टक्कर मार दी थी। हेलमेट न पहनने की वजह से उनके बेटे के सिर पर गंभीर चोट लग गई थी। 'ये पुलिस वाले आखिर करते क्या हैं? बिना लाइसेंस, नंबर वाले अवैध वाहनों के खिलाफ, चेकिंग करके उन पर नियंत्रण क्यों नहीं करते?' कमलेश की पत्नी बिलखते हुए अपने पति से पूछ रही थी। आज कमलेश को अपनी उस दिन की गलती का एहसास हुआ। अब उसे पुलिस वालों की चेकिंग का महत्व समझ में आ गया था। *

हरिभूमि रविवार भारती
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 26 अप्रैल 2026

केरल के सबसे प्रसिद्ध धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सवों में से एक है एडथुआ पेरुनल उत्सव। केरल के लोकजीवन से जुड़े इस पर्व के प्रति कुछ अन्य राज्यों एवं विदेशी पर्यटकों के बीच भी काफी लगाव है। इस उत्सव से जुड़ी कुछ अनोखी-रोचक बातें आप जरूर जानना चाहेंगे।

सांस्कृतिक उत्सव
धीरज बसाक

धर्म-संस्कृति-सामाजिक समरसता का संदेश देता एडथुआ पेरुनल उत्सव

केरल की सांस्कृतिक पहचान सिर्फ इसके मंदिरों और पारंपरिक उत्सवों तक सीमित नहीं है। यहां के ईसाई समुदाय के पर्व भी उतने ही भव्य और जीवंत हैं तथा लोकजीवन से जुड़े हुए हैं। इन्हीं में से एक एडथुआ पेरुनल उत्सव है, जो मुख्यतः सेंट जॉर्ज को समर्पित है। इसे केवल केरल के महत्वपूर्ण ईसाई धार्मिक आयोजनों में ही नहीं गिना जाता बल्कि यह दूसरे दक्षिणी राज्यों के ईसाई समुदायों के साथ-साथ दुनिया भर के सांस्कृतिक पर्यटकों के लिए भी महत्वपूर्ण आयोजन है। एडथुआ पेरुनल उत्सव हर साल अप्रैल के अंत से मई की शुरुआत तक लगभग 10 दिनों तक मनाया जाता है। इस साल यह 27 अप्रैल से 7 मई 2026 तक मनाया जाएगा।

हर दिन अलग-अलग आयोजन: इस उत्सव के दौरान चर्च परिसर और उसके आस-पास के पूरे क्षेत्र में एक विशाल मेले का आयोजन होता है। हजारों श्रद्धालु आस्था और श्रद्धा से इस उत्सव में भाग लेते हैं। बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक पर्यटक भी इसका हिस्सा बनने के लिए देश-विदेश से आते हैं। उत्सव की शुरुआत विशेष प्रार्थनाओं और ध्वजारोहण से होती है। इसके बाद हर दिन अलग-अलग धार्मिक अनुष्ठान, जुलूस और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अंतिम दिन का जुलूस या प्रोसेशन सबसे भव्य होता है, जिसमें सेंट जॉर्ज की प्रतिमा को सुसज्जित रथ पर निकालकर पूरे गांव में घुमाया जाता है। इस उत्सव के दौरान एक तरफ प्राचीन अनुष्ठान होते हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिक व्यवस्थाएं भी आयोजन का हिस्सा होती हैं।

आस्था एवं सामूहिक विश्वास का संगम: एडथुआ पेरुनल का धार्मिक महत्व भी खूब है, क्योंकि सेंट जॉर्ज के प्रति लोगों में बहुत श्रद्धा है। श्रद्धालुओं के मुताबिक इस उत्सव में भाग लेने से उनकी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। विशेषकर बीमारियों और मानसिक कष्टों से मुक्ति मिलती है। इस उत्सव में हिस्सा लेने आए, लोग अपनी तरह-तरह की मन्नतें मांगते हैं और उनके पूरे होने पर सेंट जॉर्ज को धन्यवाद देने के लिए बार-बार इस उत्सव में शामिल होने का संकल्प लेते हैं। इसलिए, यह पारंपरिक आयोजन व्यक्तिगत आस्था और सामूहिक विश्वास का भी संगम बन जाता है।

केरल की सांस्कृतिक विशिष्टता का दर्शन: एडथुआ पेरुनल, धार्मिक के साथ-साथ एक सांस्कृतिक उत्सव भी है, इसलिए यह केरल की सार्वभौमिक सह-अस्तित्व की भावना को दर्शाता है। इसमें दूसरे कई उत्सवों की तरह सजे-धजे हाथियों के साथ जुलूस निकाला जाता है, जो केरल के विशिष्ट उत्सवों की सबसे खास पहचान है। लोग पारंपरिक संगीत और लोकनृत्य का लुत्फ उठाते हैं। स्थानीय बैंड, चर्च संगीत और लोकनृत्य इस उत्सव को विशिष्टता प्रदान करते हैं। इस उत्सव के दौरान रात के समय भव्य आतिशबाजी के नजारे भी देखने को मिलते हैं, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी है महत्वपूर्ण: इस उत्सव का स्थानीय अर्थव्यवस्था के साथ भी एक बेहद गहरा और सकारात्मक रिश्ता है। उत्सव के दौरान अलग-अलग राज्यों एवं विदेशों से आए पर्यटक यहां की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देते हैं। अलग-अलग आजीविकाओं से जुड़े लोगों को उत्सव के दौरान रोजगार प्राप्त होता है या विशेष आय प्राप्त होती है।

विविधता में एकता का संदेश: एडथुआ पेरुनल उत्सव की एक अनोखी विशेषता इसकी सामाजिक समरसता है। यह उत्सव धार्मिक सीमाओं से परे जाकर लोगों को आपस में जोड़ता है, विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोग मिलकर उत्सव मनाते हैं। ऐसे में यह एकता में विविधता का जीवंत उदाहरण बन जाता है। यह उत्सव इस बात को भी दर्शाता है कि बहुरंगी भारतीय संस्कृति में गहरा साझा भाव भी है। केरल जैसे राज्य में जहां साक्षरता और सामाजिक जागरूकता उच्च स्तर पर है, ऐसे आयोजन समाज को अधिक मजबूत बनाते हैं। आज के समय में जब समाज में विभाजन और तनाव की खबरें अकसर आती रहती हैं, एडथुआ पेरुनल जैसे उत्सव हमें सकारात्मक संदेश देते हैं। यह उत्सव सिखाता है कि धर्म और संस्कृति लोगों को जोड़ने का माध्यम हो सकते हैं, न कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करने का।

कुल मिलाकर एडथुआ पेरुनल उत्सव सिर्फ धार्मिक भाव का पर्व नहीं है, यह आस्था, संस्कृति और सामाजिक एकता का जीवंत प्रतीक है। यह उत्सव केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है, जिसमें विभिन्न धर्मों और परंपराओं का सुंदर संगम देखने को मिलता है। एडथुआ पेरुनल उत्सव श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र है, वहीं यह भारतीय संस्कृति की उस व्यापक सोच का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो विविधता में एकता को सबसे बड़ा मूल्य मानती है। *

एडथुआ पेरुनल उत्सव की प्रमुख विशेषताएं

- यह अलप्पुझा (केरल) के एडथुआ गांव में मनाया जाता है और इसका मुख्य स्थल सेंट जॉर्ज फॉरेन चर्च है।
- यह हर साल 10 दिनों तक अप्रैल के अंत और मई की शुरुआत में मनाया जाता है।
- सेंट जॉर्ज को समर्पित इस सांस्कृतिक उत्सव की सबसे खास विशेषता है, इसका भव्य धार्मिक जुलूस। इस जुलूस में सजे-धजे हाथियों की परेड देखने को मिलती है, साथ ही इस दौरान पारंपरिक संगीत और नृत्य की छटा बिखरती है तथा आतिशबाजी का भी खूब रंग-बिरंगा उत्सव देखने को मिलता है।
- इसमें विभिन्न धर्मों की भागीदारी होती है, इसमें हिस्सा लेने वाले लोगों का एक बड़ा तबका ऐसे आस्थावान लोगों का होता है, जो अपनी असाध्य बीमारियों से मुक्ति पाने की इच्छा से यहां आते हैं और बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए मन्नतें मांगते हैं।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है

प्रेरक व्यक्तित्व
डॉ. पुरुषोत्तम लाल

पंजाब के मोगा जिले के एक छोटे से गांव से ताल्लुक रखने वाले डॉक्टर पुरुषोत्तम लाल का शुरुआती जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहा। लेकिन अपने अथक परिश्रम और समाज के लिए कुछ करने के संकल्प के चलते मेडिकल क्षेत्र में उन्होंने अद्वितीय मुकाम हासिल किया। डॉक्टर पुरुषोत्तम भारत में इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी के फादर कहे जाते हैं। वह देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से विभूषित हैं। डॉ. पुरुषोत्तम लाल के प्रेरक जीवन का सफर उन्हीं की जुबानी।

आसान नहीं था आरंभिक जीवन: मेरा बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था। हमारा पूरा ध्यान बस इस बात पर होता था कि घर कैसे चले और पढ़ाई कैसे पूरी हो? हम सभी भाई एक ही लैंप की हल्की रोशनी में पढ़ते थे, जिसकी चिमनी भी टूटी हुई होती थी। लेकिन मेरे अंदर कहीं एक आग जरूर थी, कुछ अलग करने की चाह। मन में यही ख्याल आता था कि जिंदगी में कुछ ऐसा करना है, जिससे अपने परिवार का जीवन बदल सकूं और समाज के लिए भी कुछ कर सकूं। उन्हीं कठिन परिस्थितियों में पले छोटे-छोटे सपने ही मेरी सबसे बड़ी ताकत बने और मुझे इस मुकाम तक लेकर आए।

परिश्रम से पाया मनचाहा मुकाम: मेरा पूरा सफर संघर्ष और मेहनत से भरा रहा है। अपनी लगन और समर्पण के दम पर मैंने नेशनल मेरिट स्कॉलरशिप हासिल की, जो मेरे लिए एक नई उम्मीद लेकर आई। इसी के सहारे मैं अमृतसर मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की पढ़ाई के लिए पहुंचा। वहां भी दिन-रात मेहनत करता रहा और हर चुनौती को एक अवसर की तरह लिया। वर्ष 1975 में अपनी क्लास में टॉप किया। डॉक्टर बनने के बाद मैंने इसे केवल एक पेशा नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम माना। इसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका गया, जहां कार्डियोलॉजी में उच्च प्रशिक्षण लिया। वहां के प्रतिष्ठित संस्थानों में काम करते हुए मैंने बहुत कुछ सीखा, खुद को निखारा।

जन सेवा के लिए देश लौट आया: अमेरिका में मुझे बहुत कुछ मिला, बेहतर सुविधाएं, सम्मान और सीखने के अनगिनत अवसर। लेकिन दिल के किसी कोने में हमेशा एक खालीपन था। जब मैं भारत आता और यहां के मरीजों की हालत देखता, खासकर वे लोग जो पैसों की कमी के कारण इलाज नहीं करा पाते, तो मन बहुत व्यथित हो जाता था। मुझे लगता था कि मेरी असली जरूरत यहां है, अपने देश में है। इसलिए एक दिन मैंने तय किया कि अब वापस अपने देश लौटना है।

मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत: मेरी सोच हमेशा से बहुत मानवीय रही है। तभी मैंने ठान लिया कि एक ऐसा अस्पताल बनाऊंगा, जहां इलाज की गुणवत्ता विश्वस्तरीय हो, लेकिन वह आम आदमी की पहुंच से बाहर न हो। मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत इसी सोच और भावना के साथ हुई, सेवा, संवेदना और सुलभ इलाज के उद्देश्य से।

इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी में योगदान: मैंने हमेशा कोशिश की कि मरीज को कम से कम तकलीफ हो और इलाज ज्यादा सुरक्षित और प्रभावी हो। अगर बिना बड़ी सर्जरी के किसी की जान बचाई जा सके, तो इससे बड़ी खुशी क्या हो सकती है। जब मैं देखता हूं कि जिन तकनीकों को हमने अपनाया और आगे बढ़ाया, वे आज हजारों लोगों की जिंदगी आसान बना रही हैं, तो दिल को सुकून मिलता है।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान: पद्म भूषण, पद्म विभूषण जैसे सम्मान मिलना निश्चित रूप से गर्व की बात है। लेकिन अगर दिल से कहूं, तो मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है। जब कोई मरीज स्वस्थ होकर अपने परिवार के पास लौटता है और आंखों में खुशी के आंसू लेकर धन्यवाद देता है, तो वह किसी भी पुरस्कार से कहीं ज्यादा अनमोल होता है।

युवा डॉक्टरों को संदेश: मैं युवाओं से यही कहना चाहूंगा कि डॉक्टर बनना सिर्फ एक करियर नहीं, बल्कि एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। मरीज आपके पास उम्मीद और विश्वास लेकर आता है। इसलिए हमेशा सीखते रहें, खुद को अपडेट रखें और ईमानदारी से काम करें। सबसे जरूरी बात, अपने अंदर इंसानियत और संवेदनशीलता को जिंदा रखें। तकनीक और ज्ञान आपको एक अच्छा डॉक्टर बना सकते हैं, लेकिन आपकी संवेदना ही आपको महान डॉक्टर बनाती है।

सफलता के मायने: मेरे लिए सफलता का मतलब सिर्फ नाम, प्रसिद्धि या पुरस्कार नहीं है। असली सफलता तब होती है, जब आप किसी की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव ला सकें। यही सच्ची सफलता है, जो दिल को संतोष देती है। *

प्रस्तुति: हरिभूमि फीचर्स

दुनिया भर में प्रचलित अलग-अलग नृत्य कलाओं के महत्व को रेखांकित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 29 अप्रैल को अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर भारत की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करते विभिन्न प्रदेशों के प्रमुख लोकनृत्यों के बारे में जानिए।

सांस्कृतिक विविधता के प्रतीक विभिन्न प्रदेशों के लोकनृत्य

महाराष्ट्र का लोकनृत्य-लावणी

असम का लोकनृत्य-बिहू

हिमाचल प्रदेश का लोकनृत्य-नाटी

परंपरा
शिखर चंद जैन

भारत विविधताओं का देश है। यहां की यह विविधता सिर्फ भाषा, खान-पान या रहन-सहन तक सीमित नहीं है, बल्कि यहां के लोक नृत्यों में भी रची-बसी है। लोक नृत्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आम जनमानस के उल्लास, उनकी धार्मिक आस्था और ऋतुओं के चक्र का जीवंत उत्सव भी होते हैं।

बिहू (असम): असमिया नववर्ष (रंगाली बिहू) के अवसर पर किया जाने वाला यह नृत्य अपनी तेज गति और हाथों के संचालन के लिए प्रसिद्ध है। यह नृत्य हाथों के फुर्तीले संचालन और पारंपरिक 'मेखला चादर' वेशभूषा के लिए भी जाना जाता है। यह नृत्य नई फसल तैयार होने की खुशी और प्रकृति के प्रति आभार ज्ञापन करने का प्रतीक भी होता है।

नाटी (हिमाचल प्रदेश): हिमाचल का सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य 'नाटी' कुल्लू और शिमला क्षेत्रों में बड़े उत्सवों के दौरान सामूहिक रूप से किया जाता है। सैकड़ों लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़कर लंबी श्रृंखला बनाते हैं और स्थानीय वाद्ययंत्रों की धुन पर कदम से कदम मिलाकर झूमते हैं। इसने 'सबसे बड़े लोक नृत्य' के रूप में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी अपना नाम दर्ज कराया है।

भांगड़ा (पंजाब): पंजाब की मिट्टी की खुशबू और किसानों के उल्लास का प्रतीक है भांगड़ा लोकनृत्य। मुख्य रूप से बैसाखी के पर्व और फसल कटाई के समय किया जाने वाला यह नृत्य अपनी ऊर्जा के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। ढोल की थाप पर रंगीन पगड़ी और लुंगी पहने गबरू जब 'बल्ले-बल्ले' कहते हुए थिरकते हैं, तो दर्शकों के पैर भी अपने आप थिरकने लगते हैं।

पंजाब का लोकनृत्य-भांगड़ा

रासलीला (उत्तर प्रदेश): ब्रज क्षेत्र का यह प्रसिद्ध नृत्य भगवान कृष्ण और राधा के प्रेम और उनकी लीलाओं पर आधारित है। ब्रज की धरती मथुरा-वृंदावन से उपजी 'रासलीला' भगवान श्री कृष्ण और गोपियों के दिव्य प्रेम की कहानी है। इसमें नर्तक अपनी भाव-भंगिमाओं से कृष्ण की बाल लीलाओं और रास को प्रदर्शित करते हैं, जो दर्शकों को सीधे भक्ति की दुनिया में ले जाता है।

घूमर (राजस्थान): राजपूताना आन-बान और शान का प्रतीक 'घूमर' को 'राजस्थान की आत्मा' कहा जाता है। अपनी शालीनता और भव्यता के लिए जाना जाने वाला यह नृत्य, भील जनजाति से आरंभ हुआ और बाद में राजपूताना घरानों की पहचान बना। इसमें महिलाएं बड़े घेरे वाले घाघरा पहनकर गोल-गोल घूमती हैं, जिससे एक सुंदर घेरा बनता है। इसकी धीमी लय और हाथ के सधे हुए संचालन इसे बेहद आकर्षक बनाते हैं।

लावणी (महाराष्ट्र): महाराष्ट्र की कला परंपरा का गौरव 'लावणी' पारंपरिक नृत्य है, जो अपनी लयबद्ध ताल और ढोलकी की थाप के साथ किया जाता है। इसमें महिलाएं नौवारी साड़ी पहनती हैं। नौवारी 9 गज की साड़ी होती है। इस नृत्य के दौरान गाए जाने वाले गीत अकसर समाज, राजनीति और प्रेम पर आधारित होते हैं।

कर्नाटक का लोकनृत्य-यक्षगान

यक्षगान (कर्नाटक): दक्षिण भारत का 'यक्षगान' एक प्राचीन और जटिल नृत्य कला है। यह केवल नृत्य नहीं, बल्कि एक संपूर्ण नाटक है, जिसमें भारी वेशभूषा, चेहरे पर चटकीला श्रृंगार और संवादों का प्रयोग होता है। इसकी कहानियां मुख्य रूप से हिंदू महाकाव्यों पर आधारित होती हैं, जो रात भर खुले मैदानों में प्रदर्शित की जाती हैं। *

यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल भारतीय नृत्य

भारत की कुछ लोकप्रिय नृत्य शैलियों को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में शामिल किया गया है। ये हैं-

गरबा (गुजरात): नवरात्रि के नौ दिनों में देवी दुर्गा की प्रतिमा या 'दीप गर्भ' के चारों ओर गोल घेरा बनाकर किया जाने वाला यह नृत्य शक्ति की उपासना का एक माध्यम एवं एकता का प्रतीक है। 'गरबा' के दौरान रंग-बिरंगी चनिया-चोली और कुर्तों में सजे लोग तालियों की लय पर जिस तरह समन्वय बिठाते हैं, वह अद्भुत होता है।

छऊ (झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल): यह एक अर्ध-शास्त्रीय मुखौटा नृत्य है, जिसमें मार्शल आर्ट, कलाबाजियां और लोक परंपराओं का मिश्रण होता है। इसमें रामायण और महाभारत जैसी पौराणिक कथाओं को नृत्य के माध्यम से जीवंत किया जाता है।

कालबेलिया (राजस्थान): राजस्थान के कालबेलिया समुदाय द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य अपनी लचीली मुद्राओं के लिए जाना जाता है। काली रंग की कढ़ाई वाली पोशाक पहने महिलाएं बीन और ढफ की धुन पर नागिन की तरह लहराते हुए नृत्य करती हैं। इसकी गति इतनी तेज होती है कि देखने वाले अपनी पलकें झपकाना भूल जाते हैं।

बड़ा पर्दा
हेमंत पाल

दर्शकों को बांधे रखने में सफल रहीं बिना इंटरवल वाली ये फिल्में

वैसे तो दो-ढाई घंटे की फिल्म के बीच में कुछ मिनटों का ब्रेक यानी इंटरवल जरूर होता है। लेकिन बॉलीवुड में कुछ ऐसी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें कोई इंटरवल ही नहीं था। बिना ब्रेक वाली ऐसी ही कुछ अलग तरह की फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर में कुछ फिल्मकार ऐसे हुए हैं, जो फिल्मों के तयशुदा फॉर्मूले को चुनौती देते हुए नए प्रयोग करते हैं। बिना गाने वाली फिल्में, सीमित किरदारों पर आधारित फिल्म या एक ही रात में घटित होने वाली घटना पर आधारित फिल्म। ऐसे प्रयोग सिनेमा को नई दिशा देते हैं। इन्हीं में से एक खास प्रयोग रहा बिना इंटरवल की फिल्म, जिसमें दर्शकों को बिना रुके पूरी कहानी के साथ बांधकर रखा जाता है। हालांकि फिल्म में इंटरवल इसलिए रखा जाता है कि दर्शक बीच में थोड़ा रिलैक्स हो जाएं और उसकी कहानी को नए सिरे से एंज्वॉय करें। इंटरवल के बहाने फिल्म की कहानी में मोड़ लाने का मौका भी मिलता है। ऐसे में बिना ब्रेक की फिल्म दर्शकों को नए तरीके का अनुभव देती है।

इसलिए किए गए प्रयोग: भारतीय सिनेमा में इंटरवल सिर्फ दर्शकों को रिलैक्स करने का साधन नहीं, बल्कि एक व्यावसायिक व्यवस्था का भी हिस्सा रहा है। लेकिन कुछ निर्देशकों ने महसूस किया कि खासतौर पर सस्पेंस, थ्रिलर और यथार्थवादी फिल्मों में इंटरवल कहानी की गति को तोड़ देता है। ऐसे में अगर फिल्म की लंबाई सीमित रखी जाए और पटकथा कसावट भरी हो, तो बिना ब्रेक दर्शकों को अधिक प्रभावशाली अनुभव दिया जा सकता है। यही कारण है कि हिंदी फिल्म इतिहास में कुछ चुनिंदा फिल्में ऐसी बनीं, जिनमें इंटरवल नहीं रखा गया। वे फिल्में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहीं।

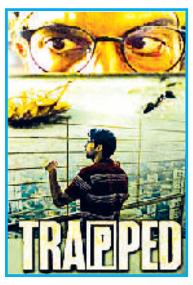

मर्डर मिस्ट्री 'इत्तेफाक': बिना इंटरवल के फिल्म बनाने की दिशा में सबसे चर्चित और शुरुआती प्रयोग 'इत्तेफाक' (1969) के रूप में सामने आया, जिसे यश चोपड़ा ने निर्देशित किया था। यह फिल्म अपने समय से काफी आगे की सोच का परिणाम थी। इस फिल्म में न तो कोई गीत था और न ही इंटरवल। कहानी एक मर्डर मिस्ट्री पर आधारित थी, जो अंग्रेजी नाटक 'साइनपोस्ट टू मर्डर' से प्रेरित थी। राजेश खन्ना ने इसमें एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभाई, जिस पर अपनी पत्नी की हत्या का आरोप होता है और वह पुलिस से बचने के लिए एक घर में शरण लेता है। उस घर की मालकिन, जिसकी भूमिका नंदा ने निभाई, खुद एक रहस्य छुपाए हुए होती है। फिल्म की कहानी इतनी तेज और रोचक ढंग से आगे बढ़ती है कि दर्शकों को इंटरवल की जरूरत महसूस ही नहीं होती। लगभग डेढ़ घंटे की इस फिल्म को कम समय में शूट किया था, लेकिन इसकी कहानी की कसावट और रोमांच ने इसे यादगार बना दिया।

सामाजिक यथार्थ को दर्शाती 'धोबी घाट': फिल्म 'धोबी घाट' का निर्देशन किरण राव ने किया था। इस फिल्म में आमिर खान मुख्य भूमिका में नजर आए, लेकिन यह पूरी तरह से स्टार-ड्रिवन फिल्म नहीं थी। यह मुंबई शहर के अलग-अलग सामाजिक और भावनात्मक स्तरों पर जी रहे चार लोगों की कहानी है। मोनिका डोगरा, प्रतीक बब्बर और कृति मल्होत्रा द्वारा निभाए गए किरदारों के जरिए फिल्म यह दिखाती है कि सपनों के शहर में हर व्यक्ति अपने-अपने संघर्षों और अधूरी इच्छाओं के साथ जी रहा है। फिल्म का स्वर बहुत ही यथार्थवादी और संवेदनशील है। इसकी सीमित अवधि और बिना इंटरवल के प्रस्तुतीकरण की वजह से दर्शक लगातार पात्रों की दुनिया में डूबे रहते हैं।

क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती 'ट्रैप्ड': विक्रमादित्य मोटवानी द्वारा निर्देशित 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव ने एक ऐसे युवक की भूमिका निभाई है, जो मुंबई के एक सुनसान अपार्टमेंट में फंस जाता है। उसके पास न खाना है, न पानी, न बिजली और न बाहर निकलने का कोई आसान रास्ता। पूरी फिल्म उसी के संघर्ष, भय और जीवित रहने की कोशिशों के इर्द-गिर्द घूमती है। बिना इंटरवल के यह कहानी दर्शकों को उसकी स्थिति में बांध देती है और एक तरह का क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती है। 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव के अभिनय और फिल्म के प्रयोगात्मक स्वरूप की काफी सराहना हुई।

ये फिल्में भी नहीं करतीं ब्रेक की डिमांड: बॉलीवुड में कुछ और फिल्में भी हैं, जिनमें इंटरवल का प्रभाव लगभग समाप्त कर दिया गया या जिन्हें बिना ब्रेक के देखने पर ही इसका असर अधिक महसूस होता है। 'ए वेडनेसडे' जैसी फिल्म अपनी तेज रफ्तार और सीमित समय अवधि के कारण बिना इंटरवल के अधिक प्रभावी लगती है। इसी तरह 'कौन' जिसे राम गोपाल वर्मा ने बनाया, भी सीमित किरदारों और एक ही लोकेशन में घटित होने वाली कहानी के कारण बिना ब्रेक ज्यादा असरदार अनुभव देती है।

आज कितना प्रासंगिक है फिल्मों में इंटरवल: आज जब ओटीटी प्लेटफॉर्म का दौर है और दर्शक बिना किसी व्यवधान के फिल्में देखते हैं, तब इंटरवल की अवधारणा पहले जितनी अनिवार्य नहीं रह गई। अब कहानी की मांग के अनुसार ही फिल्म की संरचना तय की जाती है। फिर भी सिनेमाघरों में इंटरवल का चलन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। क्योंकि यह फिल्म प्रदर्शन की परंपरा और व्यवसाय से भी जुड़ा हुआ है। बिना इंटरवल की फिल्में यह साबित करती हैं कि अगर कहानी में दम हो और प्रस्तुति में कसावट हो, तो दर्शकों को बिना किसी ब्रेक के भी पूरी तरह बांधकर रखा जा सकता है। यह प्रयोग भले कम किया गया हो, लेकिन जब भी किया गया, उसने सिनेमा को एक नई दृष्टि दी और यह दिखाया कि कहानी कहने के तरीके हमेशा बदल सकते हैं। *